चीफ मिनिस्टर

चीफ मिनिस्टर

विजय तेंडुलकर

© लेखक :
मूल्य : 30.00
संस्करण : 1991
प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर
1681, दरियागंज, नई दिल्ली-2
मुद्रक हिन्दुस्तान आफसेट प्रिंटर्स शाहदरा, दिल्ली-32
CHIEF MINISTER by Vijaya Tendulker

विजय तेंडुलकर के मूल मराठी नाटक
'भाऊ मुरारराव'
का हिन्दी अनुवाद

अनुवादिका
ललित देसाई

नाटक के मंचन की अनुमति अनुवादिका से प्राप्त करना आवश्यक है। पत्र-व्यवहार के लिए पता :

ललित देसाई
१० बी; बड़ा बाजार मार्ग
पुराना राजेन्द्र नगर
नई दिल्ली-११००६०

चीफ मिनिस्टर

पुरुष-पात्र

मुरारराव : चीफ मिनिस्टर (मुख्यमंत्री)

देसाई : हर सत्ताधारी से चिपटे रहने वाला चाटुकार

मोगरे : चीफ मिनिस्टर का पी० ए०

नानालाल : एक छोटा-सा व्यापारी

टी० टी० : विरोधी दल का एम० एल० ए०

रावसाहब : चीफ-मिनिस्टर के पार्टी के हाई कमाण्ड का सदस्य तथा कैबिनेट मंत्री

सुदाम : मंत्रिमण्डल का सदस्य—कैबिनेट मंत्री

भावमी (सिरकर) : एक सामान्य व्यक्ति, जिसने कभी मुरारराव के लिए अपनी किडनी दी थी

सवावर्ते : सरकारी अधिकारी

सिपाही, नौकर, आदि

स्त्री-पात्र

मंजुला : चीफ मिनिस्टर की पत्नी

पहला अंक

(सायंकाल। टेबल पर हार और फूलों के गुच्छों का बहुत बडा ढेर रखा है।)

मुरारराव : (टेलिफोन पर बात कर रहे हैं।) नहीं-नहीं मैं सिर्फ निमित्त मात्र हूँ। विजय तो आप सबकी शुभकामनाओं का फल है। हाँ हाँ। जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। काम आसान नहीं है। सम्पादकीय लिखेंगे? लिखिए, जरूर लिखिए, लेकिन फिजूल ज्यादा मेरी तारीफ मत कीजिए। मैं बहुत छोटा आदमी हूँ। पार्टी के नेताओं की कृपा है। नहीं, निर्णय एकमत से ही हुआ था। आपकी जानकारी गलत है। बिल्कुल गलत। देखिए ऐसा है, मतभेद तो होते ही हैं, पसन्द-नापसन्द की बात भी होती है, आखिर पार्टी इन्सानों से ही बनती है। फैसला एकमत से हुआ था। रावसाहब ने खुद ही तो मेरे नाम का सुझाव दिया था। चौधरी साहब ने अनुमोदन किया था।

(देसाई उनके पीछे एक मोटा हार लिए फोटोग्राफर से साथ खड़ा है।)

आइये। पहले अपोइण्टमेण्ट लेकर आया करें। कल सुबह दिल्ली जा रहा हूँ। शाम को वापिस आऊँगा। ठीक है। अभी-अभी जरा फुरसत मिली है। सुबह से भीड़ लगी हुई थी। टैलीविजन के लिये राज्य के नाम अभी सन्देश भी रिकार्ड

करवाना है। आज शाम को ही प्रसारित होगा। चलता है। आज ही का तो दिन है। अभी पीछे ही उस बीमारी से उठा हूँ। लेकिन ज्यादा मेहनत से अभी भी थकान हो जाती है। नही, अब तबीयत बिल्कुल ठीक है। ईश्वर की कृपा है। और हाँ, आज के पेपर मे आपने हमारा वह इश्तहार डाल दिया, उसके लिये धन्यवाद। रात जरा देर हो गई थी देने मे। लोग कुछ कह तो नहीं रहे ? जिस तक पहुँचना चाहिये, उस तक पहुँच गया, तभी फायदा है। देखते है। अच्छा थैंक यू। (रिसीवर रख कर वहीं अनमने-से खड़े रहते है।)

देसाई : (पीछे से) मुबारक हो !

मुरार : (घूमकर) कौन ?

देसाई : साहब मैं, अनन्त देसाई। मुबारक हो ! बहुत-बहुत मुबारक हो ! जरा देर हो गई। (सामने आकर जबरदस्ती हार डालता है। मुरारराव जम्हाई रोकते है। फोटोग्राफर फोटो लेता है।) बहुत अच्छा हुआ।

मुरार : थैंक यू।

देसाई : आपका मुख्यमन्त्री पद के लिये चुना जाना, इस राज्य के लिये बड़े सौभाग्य की बात है। अब तो यह राज्य हर बात मे आगे रहेगा। इसमें शक की कही कोई गुंजाइश ही नही।

मुरार : अच्छा !

देसाई : विरोधी तक कह रहे हैं'''यह सम्मान आपका नही, पूरे राज्य का सम्मान है।

मुरार : (नौकर के हाथ मे पकड़ी ट्रे मे से दो पेड़े निरपेक्ष भाव से देते हुए) लीजिए पेड़े लीजिए। चाय लेंगे ? (फोन बजता है। मुरारराव की मुद्रा चिढी हुई)

देसाई : मैं देखूँ साब, किसका फोन है ? (मुरारराव इशारे से मना करते हुए फोन उठाते हैं। देसाई फोटोग्राफर के कान के पास

बात करके उसे वापस भेज देता है ।)

मुरार : (रिसीवर में) कौन आई० जी० पी० बसाले ? क्या कह रहे हैं ? बात करना चाहते हैं ? दीजिये. लाइन दीजिये । (जम्हाई रोकते हुए) श्रेय तो बडों को ही है। मैं बहुत छोटा इन्सान हूँ। आप सबके सहयोग से जो भी कुछ बन पडेगा, करूँगा। (जम्हाई रोकते है।) हाँ-हाँ मालूम है। क्या कह रहे है ? (एकदम चौकन्ने हो जाते है, और फिर ढीले पड जाते हैं।) मैंने सोचा, मिल गया। अभी तक नही मिला ? पता गलत है, तो सही पता ढूंढना भी तो आपका काम है बसाले ! नाम गलत होने की कोई गुंजाइश नहीं है। नही, मुझे नहीं लगता। चाहे कही से भी ढूंढ लाइये। दैट्स युअर हैडेक। पुलिस फोर्स है आपके पास, कोई ऐरे-गैरो की सेना तो नही इकट्ठी की गई। चौबीस घण्टे देता हूँ आपको। कोना-कोना छानिए पर उसे जिन्दा—या नही—जिन्दा ही—लाकर हाजिर कीजिए। अब और बहाने नही सुने जाएँगे।

(रिसीवर पटक कर विचारमग्न खडे रहते है।)

देसाई . किसके बारे मे बात हो रही थी साँब ? वैसे ही पूछ रहा हूँ—

मुरार : पहले के मुख्यमन्त्रियो को भी आप ऐसे ही पूछते होंगे देसाई ?

देसाई : (हँसते हुए) हाँ-हाँ साब ! अपनी तो हाजिरी पिछले दस सालो मे रोज लग रही है यहाँ। आप तीसरे सी० एम० है। पर आप इतने डिस्टर्ब किसलिए है ? मिलना किसे चाहते है ? हम ले आएँगे उसे ढूंढ़कर…उसमे है क्या ?

(टैलीफोन बजता है।)

मुरार : (रिसीवर पर) यैस ?

मोगरे : (लाइन पर) साहब मैं मोगरे। नानालाल जमनादास आए हैं आपके अभिनन्दन के लिये।

मुरार : नानालाल ! अच्छा-अच्छा, वो नानालाल। भेजिये उसे।

(नानालाल फूलों का एक बड़ा-सा बुके लेकर आते हैं।)

देसाई : (नानालाल को अपनत्व से) आइये नानालाल।

नानालाल : (देसाई की परवाह ना करके सीधे मुरारराव को गुच्छा देकर शेकहैण्ड करते हुए) वेरी ग्लैड सर! हार्टी कांग्रेट्स! मैं नानालाल हूँ, एक छोटा-सा व्यापारी। सोशल वर्क भी करता हूँ, और आप को तो शुरू से ही बहुत चाहता हूँ। आय एम हैप्पियेस्ट टूडे साहब! हालात के मुताबिक बहुत काबिल आदमी चुना है आपकी पार्टी ने। ग्रेट ईवेंट। ग्रेन डीलर एसोसिएशन और अन्ध सेवा समिति की ओर से मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।

मुरार : (पेड़े देते हुए) पेड़े लीजिये। कुछ (जम्हाई रोकते हुए) चाय वगैरा?

नानालाल नो, नो, थैंक यू वेरी मच, मैं तो सिर्फ अपनी खुशी जताने चला आया। हमारी तरफ से आपको फुल सपोर्ट है साहब। एसोसिएशन और समिति ने तो प्रस्ताव भी पास कर दिया है। अब आपका ज्यादा वक्त नहीं लेना। टाइम इज मनी। चलता हूँ। (नमस्कार करके चला जाता है।)

देसाई नानालाल एकदम फिट आदमी है साब! अपना इटरैस्ट अच्छी तरह जानता है। अब ग्रेन डीलर्स और अन्धों से कोई सम्बन्ध है क्या? लेकिन यह है कि दोनों संस्थाओं में बराबर मौजूद है।

मुरार : देसाई, हर कोई अपना इटरैस्ट देखता है—

देसाई : यही तो मैं कह रहा हूँ। नानालाल भी तो आम लोगों जैसा ही है। लेकिन वो कौन है—जिसे आप मिलना चाहते हैं? जिसे ढूंढ निकालना चाहते हैं—विरोधी दल के एम० एल० ए० टी० टी० आते हैं। (पीठ पीछे कुछ छिपाये हुए)

मुरार : *(टी० टी० को देखकर खुश होते हैं)* आइये, आइये टी० टी०

आप भी आये हैं आज के कुम्भ मेले में ?

टी०टी० : कुम्भ मेला खत्म हो गया होगा, यही सोचकर आया था। (गुलाब का फूल सामने करके मुरारराव को नजर करते हुए) यह हमारे मालिक-मकान के बाग का है। हमारा बाग तो नासिक में रह गया। (सिर्फ फूल देखकर मुरारराव थोड़े नाराज दिखाई देते हैं।) छोटा है, पर बहुत सुन्दर लगा इसी-लिए ले आया ! आपका यश भी इस फूल की खुशबू की तरह ही फैले, वगैरा-वगैरा···याने ऐसे मौके पर कुछ काव्यात्मक, कुछ सुन्दर-सुन्दर शब्द बोलने की रीत है ना, इसीलिये। वैसे तो गुलाब खुद ही बोल रहा है अपनी खुशबू से। क्यों देसाई, आपने चीफ-मिनिस्टरों का ठेका ही ले लिया है क्या ? हर चीफ-मिनिस्टर के स्वागत के लिए आप, विदाई के लिए आप, जन्म-दिन पर आप, हर जश्न में आप, पता नहीं कहाँ-कहाँ किसलिए आप मौजूद होते हैं—

देसाई : (हँसकर) हें, हें, अभी वैसे कुछ हुआ नहीं है इस राज्य में टी० टी०। इतना जरूर है, जो भी यहाँ का मुख्यमंत्री होता है उसकी दीर्घायु हुआ करती है—

टी०टी० : होती होगी, होती होगी। वह अमर भी हो सकता है।

मुरार : पेड़े खाइये टी० टी०, मुंह मीठा कीजिये पहले···(पूरी जम्हाई लेकर) कब से आ रही थी, मौका ही नहीं मिला ! (पेड़े देते हुए) लीजिये। कल से विधान सभा में तो कड़ुवे भाषण देने ही हैं।

टी०टी० : आपने हमारी थोड़ी मुश्किल कर दी है मुरारराव !

मुरार : मुश्किल, आपकी कैसी मुश्किल ? सामने चाहे मुरारराव हो या खुद ईश्वर, आपकी तोप तो गरजती ही रहती है। आप अपना काम शुरू रखिये टी० टी०; हम भी यथाशक्ति अपना काम करते रहेंगे। संघर्ष जारी रहना ही चाहिये।

टी०टी० : हाँ, संघर्ष से जरा जागरुकता रहती है विधानसभा में, वरना विधान सभा तो शयनागार ही हो जायेगी। वैसे आपकी पार्टी के कुछ बैंक-बेंचर्स ने उसे शयनागार बना ही डाला है। परसों आपका गा वह हंबीर थोराल, अर्थमंत्री को उत्तर देने के वक्त कैसे आराम से सो रहा था, देखा नहीं आपने ?

मुरार : शर्म आती है ऐसे मौकों पर, लगता है क्या यही है हमारी लोकशाही ?

(गले में कुछ अटका हुआ-सा महसूस करते हैं।)

टी०टी० : क्या हुआ ?

मुरार : टेलिविजन के लिये सुबह राज्य के नाम संदेश रिकार्ड करवाया था, उसी की याद आ गई। मैंने उसमें लोकतंत्र पर बडे गौरव-पूर्ण विचार रखे हैं। क्या लेंगे ? चाय, कॉफी ?

टी०टी० : सिर्फ चाय कॉफी ?

मुरार : (हँसते हुए) तब फिर क्या चाहिये ?

टी०टी० : सिर्फ चाय कॉफी से आज का दिन सेलिब्रेट करना ठीक नहीं है मुरारराव !

मुरार : यह सम्मान से ज्यादा जिम्मेदारी है टी० टी०, मैंने अपने टी० वी० संदेश में भी यही कहा है। काम सचमुच बहुत कठिन है।

देसाई : *आप तो मजाक कर रहे हैं सॉब। "मॅन ऑफ द क्रायसिस"*— मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में दमकने वाले इन्सान— आपका वर्णन तो इन्हीं शब्दों में करना पडेगा।

टी०टी० : देसाई, आपका मक्खन लगाना हो गया शुरू जोर-शोर से ?

देसाई : वह रुका कहाँ था ? एक से एक गुणी नेता मिल रहे हैं हमें··· हम करें भी तो क्या करें ?

मुरार : अच्छा देसाई, फिर मिलेंगे।

देसाई : (बुरा न मनाते हुए) हाँ हाँ, जरूर। मैं तो आता ही रहूँगा। अच्छा टी० टी०। (अन्दर की ओर जाते हुए) जब आया हीं

हूँ तो भाभी साहिबा को भी एक बार मुबारकबाद देता जाऊँ…

टी०टी० : (मुरारराव को) अब आप से, क्या कहूँ ? इतना जरूर है, कि ऐसे चमचों से जरा सावधान रहिये।

मुरार : सब को अच्छी तरह पहचानता हूँ मैं टी० टी० ।
(हाथ के गुलाब से खेलते हुए)

टी०टी० : मूड में नही लगते आप आज। इस अधिकार और सम्मान पाने की खुशी कम से कम एक दिन तो आप मनाते। फेरीवाले से जिन्दगी की शुरुआत करके आज आप मुख्यमंत्री तक बन चुके हैं। उस पर जिस खूबी से एक-एक करके आपने पहले वाले सी० एम० को अकेला और निहत्था कर दिखाया…और हाँ, वह परसों वाला निर्णयात्मक प्रस्ताव तो बहुत लाजवाब रहा। अभी कुछ दिन पहले ही तो…आपका एक प्रकार से पुर्नजन्म हुआ है। यह दिन देखने के लिये आज आप मौजूद हैं, यही क्या कम सौभाग्य की बात है, मुरारराव ! केवल बड़ों की क्यों ? आप पर तो ईश्वर की भी बड़ी कृपा है।

मुरार : हाँ टी० टी०; इसमें कोई शक नही कि ईश्वर की और प्रधानमंत्री तक की मुझ पर बड़ी कृपा है। लेकिन आज सुबह से मैं जरा बेचैन हूँ।

टी०टी० : क्यों ? प्रधानमंत्री की कृपादृष्टि के लिये ? (धीमे स्वर में) कोई और नई खबर है क्या ?

मुरार : नहीं, जिसकी वजह से मैं आज जिन्दा हूँ, उससे मिलूँ, उस के लिये कुछ करूँ, ऐसा बारबार सुबह से मुझे कचोट रहा है…

टी०टी० : (निराश हो कर) अच्छा, अच्छा। वो जिसने अपनी किडनी दे कर आपकी जान बचाई थी ? मिलिये उससे। जरूर कीजिये उसके लिये कुछ। अब तो आसानी से आप उसकी मदद कर सक्ते हैं। जिस-जिस के लिये कुछ करने को आपका जी चाहता है, उन सबका भला करने का समय अपने आप चलकर आ गया

है अब तो आपके पास।

मुरार : (थोड़ा निराश हो कर) पर वो है कहाँ ? उसे मिलना चाहिये टी० टी०। सब के लिये तो नहीं, पर उसके लिये मैं जरूर कुछ करूँगा। (फोन बजता है, मुरारराव उत्सुकता से फोन उठाते हैं।) यैस ! कौन ?

मोगरे : (फोन पर) साहब मैं, मोगरे। 'लोकतंत्र बचाओ' संस्था के कुछ प्रमुख कार्यकर्ता आए हैं। आपका सरेआम सत्कार करना चाहते हैं। चन्दा और डेट माँग रहे हैं। मिलने के लिये भेजूँ ?

मुरार : (फोन पर) देखते हैं। सात बजे पार्टी की मीटिंग है। उसके बाद राज्यपाल से मिलने जाना है। अगर वे राजी हो तो उन्हें रात देर से बुला लीजिये। और कहिये चन्दा ऐसे नहीं मिलेगा। चन्दा लेकर सत्कार न करने वाले बहुत देखे हैं आजकल। यह भी एक तरह का करप्शन ही है, हमें इसे बढ़ावा नही देना चाहिये।

मोगरे : (लाइन पर) अच्छा साहब, कहे देता हूँ।

मुरार : (जल्दी से) वह आखिर की बात मत बताना—नही तो सब गड़बड़ कर दोगे। (अन्दर से देसाई आकर पीठ किये हुये मुराररात को अपनी गर्दन झुकाकर अभिवादन करता है। और टी० टी० की तरफ हँसकर, देखकर चला जाता है। मुरारराव फोन पर ही बात कर रहे है।) और हाँ, आई० जी०पी० वसाले को फिर एक बार रिंग करके डाँट—नही, याद दिलाइये, कहिये किसी भी हालत में उसे यहाँ जरूर आना चाहिये। नहीं तो उसकी रिटायरमेंन्ट पक्की।

मोगरे : (लाइन पर) बता देता हूँ साहब !

मुरार : (फोन पर) और हाँ, अलग-अलग विभागो के सस्पेंड किये जाने वाले अधिकारियों की सूची तैयार हो गई ?

मोगरे : सूची तो बहुत बड़ी हुई जा रही है साहब—

मुरार : (फोन पर) और भी बड़ी कीजिये। चाहे तो बाद में सबको रीइन्स्टेट कर लेगें, पर फिलहाल तो इस सूबे में हमारी अधिकार प्राप्ति जोर-शोर से पता लगनी चाहिये सबको।
(पीछे से मंजुलाबाई आती हैं। टी० टी० हँसकर उन्हें अभिवादन करते हैं।)

मुरार : (फोन पर) और—हैलो—रेडियो पर वह अनाउन्समेंट हो गई क्या मोगरे ?

मोगरे : (लाइन पर) कौन-सी साहब ? हाँ···हाँ···पर उसे सुनने के लिये समय कहाँ मिला ? चलो खैर रेडियो तो अपना ही है। अनाउन्समेंट हो ही गई होगी। कल इसकी पूरी व्यवस्था कर दी थी···

मंजुला : अनाउन्समेंट हो चुकी है।
(मुरारराव घूमकर देखते हैं। रिसीवर रखने लगते हैं।)

मंजुला : जरा इधर दीजिये रिसीवर···मोगरे से बात करनी है मुझे···
(रिसीवर लेकर) मोगरे, कल सुबह ही उस इण्टीरियर डेकोरेटर को बुलवा लीजिये। मुख्यमंत्री के बंगले पर शिफ्ट करने से पहले वहाँ का सारा फर्नीचर बदलवाना है। पहले का सारा निकलवा देना है। वहाँ सब कुछ नया होना चाहिये। (रिसीवर रख देती है।) मैंने सुनी है अनाउन्समेंट रेडियो पर।

मुरार : क्या ?

मंजुला : ए० एच० दो सौ सत्तर से मिलने वाले ब्लड ग्रुप के सिन्दकर नाम के आदमी ने कुछ समय पहले एक मरणोन्मुख इन्सान को अपनी किडनी दे कर उपकृत किया था। वही इन्सान अब सिन्दकर को किसी जरूरी काम से मिलना चाहता है। श्री सिन्दकर जहाँ कहीं भी हों उस आदमी से सम्पर्क करें। हो गई आपकी तसल्ली ?

मुरार : इससे क्या तसल्ली होगी ? वह मिलें तब तो···

मंजुला : जब इतनी कोशिश हो रही है, तो जरूर मिल जायेगा। है ना टी० टी० ? ज्योतिषी को बुलाकर उसे कुन्डली भी दिखाई थी, उसने भी कहा, जरूर मिल जायेगा—कोई मामूली ज्योतिषी नही, राष्ट्रपति का चुनाव परिणाम बताने वाला ज्योतिषी है वह।

टी०टी० : फिर तो जरूर मिल जायेगा। ना मिलने का कोई कारण ही नही है। हाँ अगर किडनी देने वाला वह आदमी आज अस्तित्व में ही ना हो, तो बात दूसरी है।

मुरार : नही-नही होगा, कैसे नहीं ?

मंजुला : इनके तो दिलों-दिमाग पर वही छाया हुआ है कल से। रात-भर तड़पते रहे। सुबह-सुबह मुझे उठाकर बोले, उसी की बदौलत मैं आज यह दिन देख रहा हूँ। ऐसा लगता है, सब कुछ उसी का दिया हुआ है, यह दिल की धड़कन, यह शरीर, यह आँखें—सब कुछ उसी के दम पर है। कह रहे थे, मैं वही हूँ। उस के शरीर के एक भाग से ही मेरा आज अस्तित्व है। उस के महादान से ही आज मैं जिन्दा हूँ।

टी०टी० : (आश्चर्य से) अरे मुरारराव ! क्या यह सच है ?

मंजुला : उसे महात्मा कह रहे थे।

मुरार : (जरा सकुचाते हुए) शब्द गलत हो सकता है। आदत से आ गया जुबान पर। लेकिन इसमे झूठ भी क्या है ?

(टेलिफोन बजता है। मुरारराव टेलिफोन उठाकर)

मुरार : यैस ?

मोगरे : (लाइन पर) साहब, मैं मोगरे। रावसाहब आए हैं मिलने के लिये।

मुरार : (कड़वे स्वर मे) भेज दीजिये। (रिसीवर रख कर) आ ही गया आखिर।

मंजुला : कौन ? रावसाहब ना ? आ ही गई आखिर बला।

(टी० टी० बड़े मजे में यह प्रतिक्रिया देख रहे हैं। रावसाहब चाँदी की मूँठ वाली छड़ी और दरबारियों के स्टाइल मे मुरार-राव और मंजुलाबाई को झुककर सलाम करते हैं। उनके पीछे काला चश्मा लगायें हुए एक व्यक्ति आता है। कोने मे बैठ जाता है।)

रावसाहब : रामराम मुराररराव साहब, रामराम मौंजी।

मुरार : बैठिए।

रावसाहब : (बैठकर) क्यो टी०टी०, विरोधी दल के लोग फौरन हाजिर, औं ? (खुद ही हँसते हैं) बहुत अच्छे, बहुत अच्छे। स्वस्थ लोकतंत्र के लिये यह जरूरी भी है।

मुरार : अरे भई उन्हे पेड़े दो। (*जैसे ही नौकर ट्रे लेकर पास आने लगता है, वैसे ही उसे रावसाहब की तरफ भेजते हैं।*) लीजिये, रावसाहब ! मुँह मीठा कीजिए।

रावसाहब : जरूर-जरूर, क्यों नही। पर हमारा मुँह तो बिना मिठाई के ही मीठा हो चुका है मुराररराव ! काबिल आदमी उचित जगह पर आ जाये तो अच्छा लगता है। किसी शायर ने भी कहा है। (एक शेर कहता है।) अगर गुणों का आदर होता हो अपना व्यक्ति-गत विरोध आडे लाने वाले कम से कम हम तो नही है। वैसे हमारी इनकी (*यह टी० टी० को उद्देश्य करके*) लाख स्पर्धा हो, (बाहे ठोक कर) लडना हो तो बड़े जोर-शोर से लडेंगे भी, पर ऐसे जैसे कुश्ती हो। कुश्ती खत्म, स्पर्धा भी खत्म, उसी समय प्रतिस्पर्धी से हाथ मिलानेवालों में से हम हैं। आदमी मे स्पोर्टमेनशिप तो होनी ही चाहिये। वैसे राजनीति भी क्या है, कुश्ती का खेल ही तो है। (टी० टी० तालियाँ बजाते हैं। रावसाहब शायराना तरीके से उसे कबूल करते हैं।)

टी०टी० : भाषण तो तालियों के लिए था राव साहब ! पर क्या यह सच नहीं है कि फेरीवाले का हल्का धन्धा करने वाला एक मामूली

आदमी, आज जब एक सूबे का मुख्यमंत्री बन गया है, आपको दिल से मंजूर है ?

रावसाहब : आपको तो ऐसा ही लगेगा। अगर हम कहें कि इन्सान के दो पैर होते हैं, तब भी तो आप विरोध ही करेंगे। तब आप कहेंगे कि इन्सान के चार पैर होते हैं। दो पैर हमने किसी अपने मतलब से छिपा लिये हैं, यह आरोप सत्तारूढ़ दल पर थोप कर, किसी न्यायाधीन पूछ-ताछ, नहीं तो माफी की माँग, या फिर सभा त्याग की माँग आप जरूर करेंगे।

टी०टी० : इन्सान का एक पेट होता है, और उसे भरने की जिम्मेदारी शासन पर है। इतना आप मान गए, तो भी बहुत है राव-साहब, पैरो की बात रहने दीजिए।

रावसाहब : (पेट पर हाथ फिराकर) इन्सान का पेट ! यही तो आप बायें पक्ष वालो का मूल सिद्धान्त है। ठीक है, इसी से तो आपके भी पेट भरते हैं—

टी०टी० : हमारे पेट बहुत छोटे है, रावसाहब ! पेट तो सत्ताधीशो के होते हैं।

मुरार : (जम्हाई रोकते हुए) जाने दीजिए टी० टी०, आप भी रहने दीजिये रावसाहब, कल से तो बहस करनी ही है।

रावसाहब : बहस कैसी ? थोड़ा हँसी-मजाक है, बस और क्या ? जिन्दगी का मतलब है मजा। चार दिन का मेला है, दुनिया से लेकर भी क्या जाना है आखिर ? शायर ने कहा है, (शेर सुनाते हैं) *क्यों माँ जी ?*

मजुला : चाय लीजिये।

रावसाहब : नही, अब चाय का मजा नही आयेगा। पेड़ो से मुँह मीठा हो गया है। फिर सही। चलूँ मैं ? (उठते हैं, एकदम गम्भीर हो जाते हैं।) कुछ कहना चाहता था शाम की मीटिंग से पहले, लेकिन अब बाद मे कहूँगा। (टी० टी० की तरफ एक नजर

डालते हैं।)

टी० टी० : (इशारा समझकर उठते हुए) मैं चलता हूँ—

मुरार : नहीं नहीं··· (रावसाहब से) आइये, हम जरा उधर बात कर लेते हैं। आइये··· (रावसाहब को ले कर अन्दर जाते हैं।)

रावसाहब : (अन्दर जाते-जाते टी० टी० को) माफ करना···बेअदबी करने का कतई इरादा नहीं था मेरा··· (दोनों अन्दर जा चुके हैं।)

मंजुला : बड़ा घाघ है मरा! कौन-सी नई मुसीबत खड़ी करेगा, भगवान जाने।

टी० टी० : चाहे शायर ने ना कहा हो, लेकिन ये तो मुसीबतें बढ़ाने वालों में से ही हैं, मंजुलादेवी! मुरारराव को चैन नहीं लेने देंगे यह आस्तीन के 'शेर'।

मंजुला : कई बार तो लगता है, क्यों इस फंदे में फँस गये? इतने बुरे-बुरे लोगों से पाला पड़ता है, अब किसको क्या कहो। वो देसाई है ना! सीधे भाभी-भाभी करते रसोईघर में ही घुस आया···कहने लगा इस बँगले में आपके आने से पहले भी मैं आता रहा हूँ। बेशरम कहीं का!

टी० टी० : यही तो लोकप्रिय बनने के गुर हैं। राज्य चलाने वालों को यह सब सीखने ही पड़ते हैं। पति के साथ पत्नी को भी (धीमी आवाज में) लेकिन वहाँ जो बैठा है, वह कौन है?

मंजुला : कौन? (देखकर धीमी आवाज में) पता नहीं। रावसाहब के साथ आया था न? उनको तो कोई न कोई ऐसा मुरीद चाहिए ही जो उनके शेरों की दाद दे—

टी० टी० : मतलब यह दाद है उनकी?

मंजुला : और नहीं तो क्या?

टी० टी० : और हम उसी के सामने रावसाहब के बारे में···

मंजुला : मैं तो और भी बोलूंगी। मैं किसी दल के हाइकमांड की

नौकर नहीं। मैं अपनी मर्जी की मालिक हूँ। मुझे किसी का डर नहीं!

टी० टी० : अब आप मुख्यमंत्री की पत्नी हैं, मजुलादेवी! आपको जरा सम्भलकर ही रहना चाहिए। आपका कहना मुरारराव को भारी पड सकता है। आपके किसी गलत कथन से सरकार तक उलट-पुलट सकती है···

मंजुला · (शर्माकर) हटिये। (मुरारराव आते हैं।)

मुरार : क्या हुआ? ऐसा क्या कह दिया आपने टी० टी० ?

टी० टी० · वो कहाँ हैं?

मुरार : कौन रावसाहब? वो तो चले गये उधर से ही। (मंजुलाबाई से) माँजी को प्रणाम कहिए, ऐसा सन्देश है उनका।

मंजुला : माँजी?

टी० टी० : वाह! बेटा हो तो ऐसा गुण्डा—

मजुला : मजाक छोड़िए! (मुरारराव को हल्के स्वर से) उसे देखा क्या, वो—

मुरार : (देखते हुए) कौन है?

मजुला : रावसाहब के साथ आया था—

टी० टी० : उनके पीछे ही आया था—मैंने देखा था।

मुरार : रावसाहब अपना चमचा यहाँ भूल गये? यह नही हो सकता···

मजुला : फिर कौन है वो?

(वो काले चश्मे वाला इन्सान कोने मे चुपचाप बैठा है।)

मुरार : (टेलिफोन की तरफ जाते हुए) मोगरे से पूछना पडेगा—

मजुला : मोगरे से किसलिए, सीधे उसी को पूछ लेती हूँ। (उस आदमी के पास जाकर, गला साफ करते हुए।) आप—(वह आदमी काले चश्मे के अन्दर से ॲब्सेन्ट माइण्डेडली देख रहा है।) मुख्यमंत्री से कोई काम था क्या? (वह गर्दन हिलाकर मना

कर देता है।) फिर यहाँ किसलिए आये हैं? रावसाहब के साथ आये थे क्या?

आदमी : (उठते हुए) कौन रावसाहब?

मंजुला : अकेले आये थे क्या यहाँ?

आदमी : हाँ।

मंजुला : और कुछ काम भी नहीं है आपको?

आदमी : नहीं।

मंजुला : तो क्या आपने इस जगह को ऐरे-गैरों का वेटिंग रूम समझ रखा है?

मुरार : (टी॰ टी॰ को) हैरानी है। कार्य के बगैर यह घुसा कैसे यहाँ? (जोर से) देखिये, पहले आप यहाँ से चलते बनिये। जायेंगे या बुलवाऊँ पुलिस को? जाइये, चलते बनिये···

टी॰ टी॰ : रुकिए मुरारराव, उसे जरा शिक्षा देना जरूरी है। (थोड़ा आगे होकर उस आदमी से) यहाँ कौन रहता है, पता है? मुख्यमन्त्री! मुख्यमन्त्री कौन होता है मालूम है? पूरे राज्य का मुखिया। मुखिया को बहुत काम होते हैं।

आदमी : (बोर होकर अपना हाथ थोड़ा झटक कर 'पता है' ऐसा संकेत करता है।)

टी॰ टी॰ : तो फिर भले आदमी, बेकार बिन बुलाये यहाँ आकर क्यों बैठे हो?

आदमी : बोर हो गया हूँ बहुत।

टी॰ टी॰ : क्यों बोर क्यों हो गये?

आदमी : अपन फिर नहीं आयेंगे।

मंजुला : किसी ने यहाँ आने के लिए बुलावा भेजा था क्या?

आदमी : हाँ।

टी॰ टी॰ : हाँ? मुख्यमन्त्री ने तुझे बुलावा भिजवाया था? (मुरारराव से) पेंच थोड़े ढीले लगते हैं। जाओ भाई, अपना रास्ता नापो।

(वह आदमी नाक के नीचे सरका हुआ चश्मा ठीक करते हुए जाने लगता है।)

मुरार : (कुछ शंका होती है।) ठहरो; नाम क्या है तुम्हारा ? सच-सच बताओ—

आदमी : किसका ? मेरा ? सिंदकर। भाई सिंदकर कहते है अपन को।

मुरार, मंजुला : (एक साथ) भाई सिंदकर ?

आदमी : *क्या हुआ ? अपना नाम है यह।*

मुरार : जरा रुको। (टी० टी० देख रहे हैं। दो कदम आगे होकर) मुख्यमन्त्री ने किसलिए बुलाया था आपको यहां ?

आदमी : मुझे क्या पता—उसे ही पता होगा। काम पर था, तो बहुत से लोग किसी इश्तहार की चर्चा कर रहे थे। उस इश्तहार में मेरा नाम था शायद। मैंने भी कभी किसी को अपनी एक किडनी दी थी। जिसे किडनी दी थी, उससे मिलूं ऐसा मुझे कहा गया। वो आजकल कहां रहता है, यह पता करने के लिए हस्पताल मे फोन किया। हस्पतालवालों ने यहां का पता दे दिया। (मंजुलाबाई और मुरारराव एकटक देख रहे हैं।) चलते हैं अपन।

मुरार : (अनिश्चित मन स्थिति मे) किडनी देने का कोई सबूत ?

आदमी : सबूत ? (पास जा कर, ड्रामेटिकली शर्ट पैण्ट से निकालकर पेट की निशानी दिखाता है। मुरारराव ऐसे हो जाते है, जैसे किसी ने तेज धार वाला चाकू दिखा दिया हो।) आप क्या समझते हैं, झूठ बोल रहे हैं हम ? (शर्ट पैण्ट मे घुसाकर दरवाजे की ओर जाता है। जाते-जाते) वह जरूर कोई पाजी होगा। साला बगैर काम के इश्तहार देकर बुलवाता है। मेरी आधे दिन की कमाई चौपट :

मुरार : क्या काम करते हो ?

आदमी : वर्कशाप मे मेकैनिक हूँ।

मुरार : (धीरे से मंजुलाबाई को) वही होगा क्या यह ? तुझे कुछ याद है ?

मंजुला : तब का चेहरा—कुछ बता नहीं सकती। यह काला चश्मा— (वह आदमी बाहर जा चुका है।) छी:, मुँह से शराब की बदबू भी आ रही थी।

मुरार : (जल्दी से टेलीफोन उठाकर) मोगरे—अभी-अभी जो आदमी यहाँ से गया, उसे जाने मत दीजिये। रोके रहिये उसे। (मंजुलाबाई को) जरा अच्छी तरह से याद कर लें···मैंने तो उसे देखा भी नही था। सिर्फ समाचार पत्र मे फोटो, और वह भी बेहोशी मे···ऑपरेशन के बाद···बस इतना ही देखा था···पर तूने तो देखा था उसे···ऑपरेशन के बाद।

मंजुला : वह चेहरा अलग था। पर···ऐसा ही कुछ था वह भी। कुछ नहीं कह सकती···बहुत ही मामूली था चेहरा···और उस वक्त वह बेहोश भी तो था। कपड़े भी हस्पताल के थे। (फोन बजता है। मुरारराव फोन उठाते है।)

मोगरे : (लाइन पर) उसे रोक रखा है साहब। पर वह रुकने के लिए तैयार नही है। जाने की कह रहा है।

मुरार : पाँच मिनट और रोके रहिये। किडनी निकालने की निशानी तो है उसके पेट पर। फिर नाम भी वही बता रहा है।

मोगरे : (लाइन पर यह सब सुनकर) साहब···!

मुरार : नहीं, आपसे नही। (रिसीवर रख देते हैं।)

मंजुला : पर मुँह से शराब की बदबू···

टी०टी० : आपको किडनी देने वाला आदमी यही है या नही. सवाल यही है न मुरारराव ?

मुरार : हाँ। कही कोई और ही बहाना बनाकर अपना काम न साध ले। तब तो विरोधियो को चर्चा के लिए अच्छा खासा मजमून

मिल जायेगा।

टी०टी० : पर वह तो आपका एक हिस्सा है ! आपको जीवन देने वाला ! आपकी धड़कन, आपकी दृष्टि, आपकी दुनिया, आपका अस्तित्व उसी से है, सुबह मंजुलादेवी से भी यही कह रहे थे न आप ? और अब जब वह सामने आया है, आप उसे पहचान भी नहीं सकते ? आप भी कमाल करते हैं मुरारराव ? आपकी आत्मा कुछ नहीं कहती ? या सत्ता पाकर वह भी खो गई कहीं ?

(निर्लज्ज हँसी हँसते हैं।)

मुरार : मज़ाक छोड़ो टी० टी०। ऐसे मामलों में अपना शक दूर कर लेना हमेशा अच्छा रहता है। राजनीति में कौन कब कैसे खेल दिखा जाय, क्या पता ?

(फिर फोन बजता है। मुरारराव रिसीवर उठाते हैं।)

मोगरे : (लाइन पर) साहब···

मुरार : रुकिये जरा···

(रिसीवर नीचे रखकर बेचैनी से चक्कर लगाते हैं।)

मंजुला : इतना याद है, तब वह मेकैनिक नहीं था।

टी०टी० : लेकिन बाद में तो बन सकता है ? इतने समय मे जब कोई चीफ-मिनिस्टर बन सकता है, तो क्या कोई और मेकैनिक नहीं बन सकता ?

मुरार . क्या करूँ···कैसे तसल्ली करवाऊँ ?

टी०टी० : उसे इसी वक्त लॉक-अप में बन्द करवाकर पुलिस-इन्क्वायरी के आर्डर दे···

मुरार : (जरा गुस्से मे) टी० टी०··

(फोन फिर बजता है। बन्द हो जाता है।)

टी०टी० : मेरा कहा मानेंगे मुरारराव ? वो जरूर वही होगा—आपको बीड़ी की तरह किडनी दे कर आपसे कुछ भी न लेकर लापता

हो जाने वाला !

मंजुला : लेकिन उसका हुलिया—शराबियों जैसी उसकी हालत—

टी०टी० इसीलिए तो मुझे पक्का विश्वास है। अच्छे घर का कोई चरित्रवान इन्सान अपनी किडनी किसी को बिना कुछ लिए कभी देता क्या ? खुद की दो किडनियों में से एक किडनी देना, जेब से दस रुपये निकालकर देने जैसा आसान तो नहीं है मंजुलादेवी ! ऐसा करना इन्सान की जिन्दगी और मौत का सवाल है। कोई कितनी ही कीमत क्यों न दें, कोई भी सभ्य समझदार आदमी अपनी किडनी इस तरह देने को तैयार न होगा। मैं तो नहीं मानता। अपने आप बिना किसी कीमत के और ये भी न जानते हुए कि लेने वाला आदमी कौन है, अपनी किडनी पागल की तरह दे गया—इसका मतलब है वो आदमी कोई 'ऐसा वैसा' ही है। यह जो अभी गया है न, इसी की तरह होगा, मुरारराव !

मुरार : अच्छा !

टी०टी० : मुझे तो यह 'वही' लगता है। आप चाहे इसे बाहर निकाल दें, या घर में रख लें। विरोधियों की बात मानने का चलन ही कहाँ है आप लोगों का ? मैं चलता हूँ अब—चलता हूँ मंजुलादेवी—

मंजुला : बैठिये टी० टी०; खाना खाकर जाइये—

टी०टी० : सॉरी, खाने के लिए मना करना मेरे लिए वैसे मुश्किल ही होता है, लेकिन अभी जरा पार्टी की कार्यकारिणी की मीटिंग है। चुनावों में हमारी हार का पोस्ट-मार्टम जो किया जाना है। आप हर चुनाव जीतते है—और हम हर अपनी हार का पोस्ट-मार्टम करते रहते है—ऐसा तो अब जैसे लिखा ही जा चुका है। जाना होगा मुझे। फिर से एक बार बैस्ट-विशेज। कल मिलेंगे ही असेम्बली में। सिर्फ कल ही हम आपके

स्वागतार्थ बैंड बजायेंगे।

(जाते हैं। टेलीफोन बन्द)

मुरार : (बैठे हुए हैं। मंजुलाबाई से) तुम्हें क्या लगता है ?

मंजुला : मेरा क्या ? आपको क्या लगता है, वो ज्यादा जरूरी है।

मुरार : (चुपचाप उठते हैं। जाकर रिसीवर उठाते हैं।)

मोगरे : (लाइन पर) साहब, अब शान्त हो गया है वह। नशे में लगता है।

मुरार : नशे मे !

मोगरे : (लाइन पर) हाँ साहब ! मुझे लगता है, जब उसे यहाँ रोका था, तब उसने अपने मुँह मे कुछ डाल लिया था। कोई गोली होगी शायद। बाद मे वह एकदम चुप ही हो गया।

मंजुला : क्या कह रहा है मोगरे ? कैसा नशा है ?

मुरार : कोई खास बात नही। (फोन पर) मोगरे, उसे इधर भेज दीजिये।

मोगरे : (लाइन पर) साहब—(थोड़ी देर बाद) अच्छा साहब !

(मुरारराव फोन रख देते हैं।)

मंजुला : कैसा नशा ? क्या कह रहा था मोगरे ?

मुरार : (बेचैनी से) कहा न, कुछ नही। (पुलिस का एक सिपाही उस आदमी को पकड़कर ले आता है। वह आदमी खुद को सम्भाल नही सकता। आँखों का काला चश्मा अब नाक तक उतर आया है।)

मंजुला : (उद्वेग से) यह सब क्या है ?

सिपाही : पक्का अफीमची लगता है साला !···(जीभ काटकर मुरारराव को) भूल हो गई सरकार। (मुरारराव उस आदमी की तरफ एकटक देख रहे हैं। पास जाते हैं। उसे नशे की हालत मे देखते रहते हैं। वह आदमी अपनी गर्दन भी सम्भाल नही पा रहा।)

मुरार : सिदकर···! (उससे कोई रिस्पॉन्स नहीं मिलता। उसका लटकता हुआ सरठोड़ी से पकड़ कर ऊपरकरते हुए) सिदकर···! (सिपाही बड़ी हैरत से यह सब देख रहा है। मुरारराव धीरे से उसका काला चश्मा उतार कर उसकी जेब में रख देते हैं। (भावुक स्वर से) सिदकर···(खुद को सम्भाल रहे हैं। सिद···कर···यह क्या सिदकर···अँ?

मंजुला : ले जाने दीजिये उसे—

मुरार : नही। (सिपाही से) उसे गैस्ट-रूम में ले जा और ठीक तरह सुला दे।

सिपाही : सरकार···!

मुरार : मैं जो कहता हूँ वो कर। गैस्ट-रूम में ले जाकर ठीक से सुला दे इसे, और गाड़ी भेजकर डॉक्टर को बुलाने के लिये कह मोगरे से।

सिपाही : जी सरकार! (उस आदमी को ले जाने लगता है।) पर गैस्ट-रूम में तो पंडित जी है। कल सुबह जाना है उन्होंने···

मुरार : (याद करते हुए) पंडितजी···!

मंजुला : अजी वही···याद नही···चुनाव में आपकी जीत के लिये हवन करवाने वाले···

मुरार : तो फिर हमारे बैड-रूम मे ले जा उसे···

मंजुला : अं···ऽ···?

मुरार : (जल्दी से गुस्सा होते हुए) देख क्या रहा है गधे ? सुनाई नहीं देता ? (फिर अपने आपको सम्भाल कर) कोई एक रुक जाना उसके पास। देख उसकी जेबें ठीक से टटोलकर और गोलियाँ हो तो निकाल लेना—(मंजुलाबाई बड़ी कठिनाई से चुप हैं। सिपाही उस आदमी को ले जाता है।)

मंजुला : हमारे बैड-रूम में रखेंगे उसे,और वह भी इस हालत में···

मुरार : (खुद में खोये हुए से) हाँ। (धीरे-धीरे) इसी तरह की सब

व्यवस्था होनी चाहिये उसकी यहाँ भी।

मंजुला : (चौंककर) क्या···?

मुरार : (धीरे-धीरे अपने ही मूड में, भावुक स्वर से) यह मुख्यमंत्री का हुक्म है। (होश में आकर) समझती क्यों नहीं आप···

मंजुला : समझ गई। अब आप आराम कीजिये। कितने थक गये हैं··· फिर शाम को पार्टी की मीटिंग भी है, रात को राज्यपाल से भेंट है···

मुरार : (शान्ति से) आज मैं कुछ नहीं करने वाला।

मंजुला : क्या कहा ?

मुरार : मंजुला, मुख्यमंत्री बन जाने से ही क्या मैं एक हाड़माँस का इन्सान नहीं रहा ?

मंजुला : मतलब ?

मुरार : कम से कम आज तो मेरा ध्यान और किसी बात मे नहीं लगेगा···

मंजुला : तब क्या करने की सोची है आपने ?

मुरार : उसके पास ही रहूँगा मैं—वह—मेरी जिन्दगी का हिस्सा—मुझे जीवन देने वाला—

मंजुला : (कुछ कहना चाहती है, लेकिन रुककर) अच्छा, ऐसा ही कीजिये। सुदाम भाईसाहब को रात खाने पर बुला रही हूँ मैं। पार्टी मीटिंग यही रखने के लिये कहे देती हूँ उन्हे।

मुरार : (आग्रह से) नहीं—पार्टी-मीटिंग यहाँ नही होगी।

मंजुला : आज पार्टी-मीटिंग मे आपका होना जरूरी है। आप समझते क्यों नहीं ? मंत्रिमंडल की सूची मंजूर करवानी है न ? कल सुबह फिर सूची ले कर आप दिल्ली जाने वाले हैं···

मुरार : मंजुला, आज मैं पार्टी-मीटिंग मे नहीं जाऊँगा।

मंजुला : तब कैसे—सीधे ही सूची दिल्ली···।

मुरार : दिल्ली कल दोपहर को जाऊँगा—सुबह पार्टी मीटिंग हो

जायेगी।

मंजुला : (निःश्वास छोड़कर) अच्छा, सुवाम भाईसाहब को नहीं कह-लवा भेजती हूँ। और किसे-किसे खाने पर बुलाना है ? सुबह कह रहे थे—

मुरार : किसी को भी नहीं।

(मंजुलाबाई अन्दर चली जाती हैं। मुरारराव अकेले किसी और मूड मे। अचानक खुश हो उठते हैं। स्वतः गुनगुनाते लगते हैं। टेबिल के पास जाकर बैठ जाते हैं। रिसीवर उठा-कर)

मुरार : कौन मोगरे ?

मोगरे : (लाइन पर) जी साहब ! बैंड-रूम में सुला दिया है उसे। डॉक्टर को गाड़ी भी भेज दी है।

मुरार : (हर्षित स्वर में) कोई है ना उसके पास ?

मोगरे : जी हाँ।

मुरार : जरा ध्यान रखिये—नहीं तो भाग जायेगा फिरसे—(रिसी-वर पिन पर रखकर, फिर उठाकर) मोगरे—!

मोगरे : जी साहब ?

मुरार : राज्यपाल से रात को अपॉइंटमेंट कैंसिल कर दीजिये। (लाइन पर मोगरे चुप) सुन रहे हैं ना ? शाम की पार्टी-मीटिंग में मैं उपस्थित नहीं हो सकता। उन लोगों से भी कहलवा भेजिये।

मोगरे : पर साहब—गलतफहमी होने की सम्भावना…

मुरार : (ऊँचे स्वर से) तो आप चले जाइये गलतफहमी दूर करने। आज के सभी कार्यक्रम कैंसिल। कल सुबह की बजाय हम दोप-हर को दिल्ली जायेंगे।

(रिसीवर रख देते हैं। अपनी अचकन उतार कर सोफे पर फेंक देते हैं। फिर कुछ याद आने पर रिसीवर उठाते हैं।)

मोगरे—।

मोगरे : (लाईन पर) जी साहब !

मुरार : जरा आई० जी० पी० बसाले को दीजिये।
(रिसीवर रख देते हैं। थोड़ी देर बाद फोन बजता है। रिसीवर उठाते हैं।)

मोगरे : (लाइन पर) साहब, आय० जी० पी० साहब बोल रहे हैं।

मुरार : (शर्ट की आस्तीन को ऊपर करते हुए रिसीवर पर) कौन ? बसाले ? मिल गया हमारा आदमी ?...अभी तक नहीं मिला ? यही उम्मीद थी मुझे।...तलाश जारी है ? पूरी दुनिया छान मारिये बसाले ! आपको नही मिलने वाला वह ! मिल ही नही सकता ! मैं जो कह रहा हूँ। दुनिया के पाँचवे नम्बर पर है ना आपका गुप्त पुलिस विभाग ! शर्त लगाते हैं, शर्त !. हो ही नही सकता, क्योकि वह आपको नही मिलनेवाला। ढूंढते रहिये, बस ढूंढ़ते ही रहिये। नही नहीं, यहाँ आने की जरूरत नही। बिल्कुल मत आइये। अच्छा।
(रिसीवर रख देते हैं। किसी मूड मे उँगुलियों से टेबल बजाते हैं। फिर उठकर अन्दर चले जाते हैं। क्रमशः अन्धेरा। अब सफेद परदे पर प्रकाश होता है। टेलिविजन पर अनाउन्सर अनाउन्समेंट करती है: "अब राज्य के नये मुख्यमंत्री नागरिकों के नाम एक सदेश देंगे। यह संदेश हमने अपने स्टूडिओ में पहले से ही टेलिविजन केन्द्र के लिये विशेष रूप से रिकार्ड किया था।" फिर मुख्यमंत्री मुरारराव का भाषण सुनाई पडता है, और वे दिखाई देते हैं।) दोस्तो, इस राज्य का मुख्यमंत्रीपद मुझ जैसे सामान्य सेवक के हाथ में सौंपकर मेरी पार्टी, और हम सबके प्रिय प्रधानमंत्री ने बहुत बड़ी जिम्मेदारी मुझ पर डाली है, ऐसा मैं समझता हूँ। इस राज्य की महान परम्परा तथा मुझसे पहले यहाँ के मुख्यमंत्री का लोकहित में व्यतीत कार्य-काल, और उनकी कार्यकुशलता, तथा राज्य के सम्मुख

आज के अनेक विकट प्रश्न, इस सारी स्थिति का पूरा जायजा लेते हुये, मुझ जैसे सामान्य कार्यकर्ता की मुख्यमंत्री पद पर नियुक्ति, सम्मान से कहीं अधिक एक चेतावनी है, ऐसा भी मैं समझता हूँ।

आज हमारा देश एक कठिन दौर से गुजर रहा है। अनेक बाहरी और अन्दरूनी समस्याएँ मुँह फाड़े खड़ी हैं। पिछले कुछ समय से प्राकृतिक संकटों ने भी विकास की घुड़-दौड़ में बहुत रोड़े अटकाये हैं। और हमने अपने रास्तों को बड़ी मजबूती से अपनी कमर कसके साफ किया है। हमें गर्व है कि हमारा सूबा इस मामले में हमेशा से ही आगे रहा है। सूखा पड़ा, बाढ़ें आईं, देश के इतिहास में चीजों की अभूतपूर्व कमी और कमरतोड़ मँहगाई हमने देखी, लेकिन हम डगमगाए नहीं। देश जीवित तो राज्य जीवित ! इस मुद्दे को ध्यान में रखकर ही हमने इतनी तकलीफें सही और अपने प्रिय प्रधान-मंत्री को अपना सहयोग दिया। इस राज्य की जनता का यह सद्भाव बड़े गर्व का विषय है। आज भी राज्य के सामने अनेक गम्भीर समस्याएँ हैं। उत्पादन में अपेक्षित बढ़ोत्तरी नहीं है। इसीलिये चीजों की कमी और बेकारी की स्थिति बनी हुई है। मँहगाई भी है, जनसंख्या में वृद्धि को जितना हम चाहते थे उतना रोकने में हम असफल रहे हैं, लेकिन यह भी मानना पड़ेगा कि साक्षरता के क्षेत्र में इस राज्य द्वारा की गई प्रगति बड़े गर्व का विषय है। बन्द या हड़ताल जैसे तरीकों से उत्पादन में कमी आती है, और अन्ततः राज्य के हालात पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मुझे खेद से कहना पड़ रहा है कि इस तथ्य की जितनी जानकारी लोगों को होनी चाहिए, उतनी नहीं है।

लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है। इस राज्य के

नागरिक विचारवान और काफी प्रबुद्ध हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयत्नों से हमारा सूबा विकास के नये-नये आयामों को छूता जायेगा।

मुझे आशा ही नहीं, विश्वास है कि आप सब की शुभ-कामनाएँ मुझे सदैव प्रेरणा देती रहेंगी। राज्य के सूखा-पीड़ित भागों और पिछड़ी हुई जमातों की अधिक-से-अधिक सहायता करने का मैं आप सबको आश्वासन देता हूँ। मैं वचन देता हूँ, कि रोजगार में बढ़ोतरी, मँहगाई की रोकथाम, जीवन की सभी आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि, नि.शुल्क शिक्षा, इन सब के लिये मैं मनसा-वाचा-कर्मणा प्रयत्न करता रहूँगा। परिस्थिति विकट जरूर है, तब भी आप सब के सहयोग से उस पर विजय पा ली जायेगी। और प्रत्येक को उसका वांछित हिस्सा मिल जाय, ऐसी मेरी भरपूर कोशिश रहेगी। जय हिन्द! जय स्वराज्य!

(फिर से उजाला।

मुरारराव, मंजुलाबाई, सुदाम पाटिल, टेलिविजन देख रहे हैं। मंजुलाबाई टेलिविजन का स्विच ऑफ कर देती हैं।)

सुदाम : गुड् परफॉर्मेन्स। रिअली गुड्। आप को कैसा लगा भाभी?

मंजुला : ठीक ही था, लेकिन…

सुदाम : लेकिन क्या?

मंजुला : कुछ नहीं, सुदाम भाईसाहब! आजकल ये कुछ ज्यादा ही मैच्योर दिखाई देने की कोशिश करते हैं।

सुदाम : क्यों?

मंजुला : अब देखिये ना; जब से मन्त्रिमंडल में आये हैं, तब से मैं कह रही हूँ, बालों को डाय किया करें। लेकिन मजाल है जो ये मेरी बात सुनें। उस वक्त तो बीच-बीच के कुछ थोड़े से ही बाल पके हुए थे, तब से अगर शुरू कर देते तो…

सुराम : यह तो सच है, हाँ साहब···आज आप काफी जवान दिखाई देते। पर भाभी, क्या आप ऐसा नही सोचती कि राजनीति में कालों की अपेक्षा सफेद बालों की ज्यादा अहमियत है ? जब से मैं राजनीति में आया हूँ, तब से बड़ों के मुंह से यही सुनता आया हूँ···"ज्यादा मत बताइये, हम सब समझते हैं। राजनीति मे ही बाल सफेद हुए हैं···" इतना कह दिया कि कोई बस्स आर्ग्युमेंट नहीं। नौजवानों के लिये अपने-अपने घर जाने का यही संकेत काफी होता था। हाल ही की पार्टी मीटिंग में भी यही भाषा चलती रही। एक ने तो टोपी उठाकर अपने थोड़े से सफेद बाल भी दिखा दिये।

मंजुला : सफेद बालों का होना जरूरी नहीं है, भाईसाहब ! रावसाहब के बाल कहाँ सफेद हैं ? रोज बिला-नागा डाय करता होगा मरा !

सुराम : हाँ ! क्योंकि रावसाहब का दायरा सिर्फ राजनीति नही है भाभी ! वे सिनेमा और नौटंकी की दुनिया मे भी बराबर चहलकदमी करते हैं।

मंजुला : हाँ-हाँ, पता है, औरतों की तलाश में फिरते हैं, यही ना ?

सुराम : मैंने तो सुना नहीं बाबा ! अपने तो कानों पे हाथ ! लेकिन अपने साहब तो ऐसे नहीं हैं ? उन्हें सफेद से काले रंग कर क्या करना है ?

मंजुला : सभी बातें क्या लोगों की खातिर ही करनी होती हैं ? अपनी पत्नी की खातिर भी तो कुछ करना चाहिये।

सुराम : पर भाभी—पत्नी को तो पता ही होता है—अपने पति का···। सॉरी, पति के बालों के असली रंग का।

मंजुला : तब भी हर पत्नी चाहती है कि उसका पति लोगों को जवान दिखाई दे। इस पर भी कुछ कहना है आपको ?

मुरार : अरे उसकी क्या सुनता है···भाषण के बारे में कुछ बता। दल

की तरफ से कोई आक्षेप तो नही आ सकता ? दल से बाहर की मुझे जरा भी चिन्ता नही। शत्रु की अपेक्षा घर के भेदियों का ज्यादा डर है हमे।

सुदाम : मुझे नहीं लगता इस भाषण के बारे में कोई कुछ कहेगा। झमेलों वाले सभी मुद्दे जानबूझ कर टाल दिये गये थे।

मुरार : यह अपना मत बता रहा है तू ?

सुदाम : नहीं नही। सिर्फ बयान कर रहा हूँ। वैसे भाषण बहुत अच्छा था। और आज के भाषण की अपेक्षा सभी का ध्यान कल घोषित होने वाले नये मंत्रिमंडल की ओर होगा...पार्टी-मीटिंग मे भी सिर्फ यही चर्चा का विषय था। लेकिन जब आपने मीटिंग में आने से मना कर दिया, तो हजार तरह के शक लोगो का दिमाग कुतरते रहे।

मुरार : और तेरा ? तेरा ध्यान नये मंत्रिमंडल की घोषणा की तरफ है या नही ?

सुदाम : झूठ क्यों बोलूं ? है। मंत्री नहीं बना तो एक रात में ही कीमत घट जायेगी मेरी अपनी कॉन्सटीचुएन्सी मे। सारे किये-कराये पर पानी फिर जायेगा। पहले अगर मंत्री ना बना होता तो बात और थी। पर एक बार बनकर ड्राप हो जाओ तो देखो अफवाहों की बाढ ! स्मगलिंग से सीधा सम्बन्ध जोड़ देंगे लोग। नही तो सोचेंगे, किसी सरकार विरोधी काम मे हाथ होगा।

मुरार : तुझे ड्राप ही कर रहा हूँ मैं।

सुदाम : जैसे आपकी मर्जी। (चेहरा एकदम उतर जाता है।)

मुरार : अरे नहीं बाबा। तेरे बगैर कैसे चलेगा मेरा ? तेरे सर पर ही तो यह जिम्मेदारी ली है, सुदाम !

सुदाम : (खुश हो कर) मंत्री ना भी बनायें, तो भी मैं आपका साथ देता रहूँगा।

मुरार : खामख्वाह तेरी निष्ठा की परीक्षा क्यों लेता। ले लिया तुझे भी लिस्ट में।

सुदाम : थैंक्यू ! (खुशी से फूलकर) राज्यमंत्री की श्रेणी में या···

मुरार : फुलफ्लैड मंत्री बना रहा हूँ तुझे। लगता है ऊपर से कोई खास विरोध नही होगा। इस बार तुम्हारे विभाग को पूरी अहमियत दी जाय, ऐसी हवा तो थी दिल्ली मे।

सुदाम : सच बताऊँ ? मैंने तो यह सोच ही लिया था कि जब मुझे खाने पर बुलाया गया है, तो नये मन्त्रिमंडल मे भी मुझे शामिल कर ही लिया होगा। अब इतनी बड़ी जिम्मेदारी मैं निभा सकूँ, इसकी शक्ति भगवान मुझे दे।

मुरार : अपनी कॉन्सटीचुएन्सी मे देने वाला भाषण यहाँ मत झाड़। (सिपाही आता है।)

सिपाही : वह उठ गया है सरकार।

मुरार : अच्छा ! उसे यहाँ ले आ।

सिपाही : जी······(जाता है।)

मुरार : तू उसे देखना चाहता था ना सुदाम ? अब उठ गया है वो। यहीं आ रहा है।

मंजुला : इनका नया अर्धांग !

मुरार : (जरा इरीटेट हो कर) मंजुला !

मंजुला : इसमें झूठ क्या है ? डॉक्टर तक बुलाया···

सुदाम : डॉक्टर ? वो किसलिये ?

मुरार : होश में नहीं था वह। मोगरे कह रहा था कोई गोली-वोली खा ली थी उसने—इसीलिये सोचा पहले से सतर्क रहना ज्यादा ठीक होगा।

मंजुला : गोली अफीम की थी।

मुरार : (जरा गुस्से से) तो क्या हुआ ?

(आगे सिदकर, पीछे से सिपाही आता है। सिदकर का चेहरा

एक्स्प्रेशनलेस ।)

सिपाही : ए ठहर ! खड़ा रह चुपचाप ।
(सिदकर चलता ही रहता है । आखिर एक कुर्सी उसके आगे लगाकर सिपाही वड़ी मुश्किल से उसे रोकता है ।)

मुरार : जा तू । (सिपाही जाता है ।) सिदकर······(ब्लैंक) अब कैसे हो सिदकर ?
(सिदकर कुर्सी के पीछे से रास्ता ढूंढ़कर आगे चलने का प्रयत्न करता है । जमीन पर कुछ ढूंढ रहा है ।)

मुरार : (प्यार भरा स्वर) क्या हुआ ? कुछ चाहिये क्या ?

सिदकर : (ढूंढ़ते हुये) चप्पलें···मेरी चप्पलें···

मुरार : चप्पलें···वो तो बाहर होगी । नही ऊपर बैड-रूम में···
(सिदकर उनके बोलने की तरफ ध्यान न देते हुए, चप्पलें ढूंढता हुआ आगे-आगे चलता जाता है । दीवार से टकरा जाता है । शायद इसका दर्द उसे महसूस नही होता ।)

मुरार : (दर्द से) अरे-अरे ! (सिदकर के पास जा कर उसका सर मलना चाहते है ।)

सिदकर : (इसका ध्यान भी उसे नही है ।) किसने ली ? मेरी······ चप्पले···

मजुला : चप्पलें कौन लेगा ?

सिदकर : (एकदम ब्लैंक चेहरे से) चप्पलें···मेरी···

मुरार : चप्पलें मिल जायेंगी बाद मे सिदकर । अभी बैठो—बैठो । (उसे हल्के से पकड़कर बिठाते हैं ।) चुपचाप बैठ जा ।

सिदकर : (तुरन्त उठकर) लेकिन मुझे···चप्पलें···चाहिये थी··· (चलना शुरू कर देता है । रास्ते मे खड़े सुदाम को) यह ठीक नही है···चप्पलें छिपा दी हैं मेरी ।

सुदाम : किसने छिपाई ?

सिदकर : मुझे ही पूछ रहे हो । (चुपचाप चलता रहता है ।) दरवाजा

कहाँ गया, दरवाजा···जाता हूँ······चप्पलों के बगैर······ चप्पलें छिपा दी···दरवाजा भी छिपा दिया ?

मुरार : किसी ने कुछ नही छिपाया। पहले यहाँ बैठ सिदकर। (उसे बिठाने का प्रयत्न करते हैं।) चुपचाप बैठ। हिलना नही।

सिदकर : (उठते हुए) लेकिन क्यों ? बाहर जाना है···

मुरार : अब खाना खा कर ही जाना, जहाँ भी जाना है।

सिदकर : चप्पलें ?···

मंजुला : उसे तो चप्पलों की ही रट लगी हुई है···ढूंढ़ दीजिये ना उसे एक बार—

मुरार : (मंजुलाबाई को इशारे से चुप कराते हुए) सिदकर हमारी यह इच्छा है···दिली इच्छा है···कि तू आज हमारे यहाँ खाना खाए।

सिदकर : चप्पलें···

मुरार : चप्पलें मिल जायेंगी, नही तो नई ले लेंगे···चप्पलों की क्या कमी है ? पर आज तो तू यहाँ है, खाना खाके जाना। आज के दिन की खुशी और भी बढ़ जायेगी। हमें अच्छा लगेगा। (मंजुलाबाई से) जरा गरम कॉफी ले आना—(वह जाती हैं। सिदकर ब्लैंक खड़ा है।) रुकोगे न सिदकर ?

सिदकर : सा ऽऽ ला—

मुरार : क्या हुआ ?

(सिदकर अपना सिर जोर से पीट लेता है।)

मुरार : कॉफी पी लो, कॉफी। जरा चुस्ती आ जायेगी। (सुदाम से) ड्रग के नशे में है अभी भी। (सिदकर उठकर चलने लगता है। मुरारराव उसे रोकना चाहते हैं, वो किसी मूड में चलता ही रहता है।)

मुरार : (जबरदस्ती उसके साथ घिसटते हुये से) सिदकर, सिदकर, रुक···कहाँ चला ?

सिदकर : काम पर—काम पर जा रहा हूँ···
(चलता रहता है।)

मुरार : (सिदकर को रोकने मे नाकामयाब होकर) सुदाम···(सुदाम जाकर सिदकर को पकड़ता है।)

सिदकर : अरे छोड़िये मुझे—छोड़िये···(बेकाबू होना चाहता है। चेहरा ब्लैंक)

मुरार : नही सिदकर, तू ऐसे नही जा सकता···सुदाम पकड़ के रख उसे···पकड़···(बेल बजाते है। सिदकर रुका हुआ। जो सिपाही आता है उसे) कुछ नही जा···(सिपाही कन्धे झटक कर चला जाता है।)

सुदाम : साहब कितनी देर ऐसे पकड़े रखेंगे इसे ? जाने दीजिये जहाँ जाना चाहता है···

मुरार . नही, बिल्कुल नही ! (सुदाम चौंककर देखने लगता है।) अभी नहीं। कॉफी आ रही है। तुम नही जानते सुदाम, इस हालत मे कहाँ जायेगा यह ? रात का वक्त है···ऊपर से इस की यह हालत···किसी चीज की होश नही इसे···पेट मे भी कुछ नही—और हम खाना खाएँ ?···(सुदाम मुरारराव की तरफ देखता रहता है। इस वक्त तक सिदकर पीठ किये हुये एक तरफ पेंट के बटन खोलने का प्रयत्न कर रहा है।)

मुरार : क्या हुआ सिदकर ?
(जल्दी से घण्टी बजाते हैं। सिपाही दोबारा आता है।) जल्दी से बाथरूम मे ले जा इसे—जा···भाग···

सिपाही : (सिदकर से) चल बे—

मुरार : (एकदम गुस्से से) अगर वह खुद जा सकता तो तुझे बुलाने की क्या जरूरत थी गधे ? इतनी भी अक्ल नही तुझे ? मूर्ख कही का। ठीक से पकड़ कर ले जा। जल्दी कर—
(सिपाही जबरदस्ती सिदकर को पकड कर अन्दर ले जाता

है।) सम्भालना इसे—कहीं जाने की कोशिश करेगा—गिर जायेगा—यहीं वापिस ले आना—लापरवाही मत करना—(सिदकर और सिपाही अन्दर जा चुके है।) (सुदाम को) ड्रग्ज से बरबाद हुआ जा रहा है। स्वास्थ्य खराब हो चुका है। ठीक से खा-पी भी कहां सकता होगा। मुझे तो लगता है, यह जल्दी ही मर जायेगा—..

सुदाम : मुझ से पूछो तो साहब, इसे बचाने की कोशिश करना बेकार है—

मुरार : लेकिन मैं ऐसी कोशिश करूँगा सुदाम! तुझे हैरत होगी। तू समझेगा मैं पागल तो नहीं हो गया, राज्य की जिम्मेदारी के साथ-साथ यह भी कर रहा हूँ। लेकिन ऐसा नहीं है। इसी इन्सान की वजह से मैं आज जिन्दा हूँ। इसने उस वक्त मुझे अपनी किडनी दी तभी आज मैं हूँ, और बदले में मुझ से कुछ मांगा भी नहीं। कुछ भी नहीं। सीधा चला गया। और आज मैं उसे ऐसे ही मरने दूं? मैं उसे यूँ ही छोड़ दूं? यह कैसे हो सकता है, सुदाम! (भावुक स्वर से) इन्सानियत नाम की भी कोई चीज है या नहीं? मैं अपने पेट में उसका एक जिन्दा हिस्सा लिये हुए हूँ···मैं और वह अब बँध चुके है···(मंजुला-बाई कॉफी ले कर आती हैं।)

मंजुला : कहाँ है···आपका वो?

मुरार : अब तक आ जाना चाहिए था···(व्यग्रता से कॉल-बेल बजाते हैं। सिपाही आता है) कहाँ है रे वो?

सिपाही : (टालमटोल करते हुए) है···

मुरार : जल्दी ले आओ उसे यहाँ···

सिपाही : कपड़े बदल रहे हैं उसके···

मुरार : क्यों?

सिपाही : (संकोच से) कपड़ों में···कर दी उसने··

सुवाम : क्या !

मंजुला : छी: ! कहाँ !

सिपाही : (मंजुलाबाई से) बाहर ही…कारपेट पर…

मंजुला : कारपेट पर !

मुरार : कमाल है ! (स्वर बदलकर) रहने दो। वैसे भी हम यह फ्लैट छोड़ ही रहे हैं…उधर नई कारपेट्स् होंगी…

मंजुला : तो क्या हुआ ? (सिपाही से) और तुम लोग सब क्या कर रहे थे ?

सिपाही : हम—हम क्या करेंगे…उसे कोई सुध-बुध ही नहीं थी…

मंजुला : उसे भले ना हो…पर तुम्हें तो होश था या नहीं ?

सुवाम : आप परेशान मत होइये, मैं जाकर देखता हूँ क्या बात है—

मुरार : तुम रुको। (खुद अन्दर चले जाते हैं। मंजुलाबाई गुस्से में।)

सुवाम : अजीब है !

मंजुला : अब आप ही बताइये, कैसे क्या करें ?

सुवाम : हमारे साहब तो एकदम हिसाबी-किताबी इन्सान…भावना से कोसों दूर…पिछले साल जब मंत्री थे, तो कितना बड़ा करप्शन का आरोप लगा था, 'त्यागपत्र दीजिये' का कितना शोर विरोधियों ने मचाया था। साहब जब खाद्यमंत्री थे तो सूखे की बात लेकर विरोधियों ने प्रदर्शन और घेराओं का हंगामा खड़ा कर दिया था। कोई पतली खालवाला होता तो कभी का कुर्सी छोड़कर भाग लेता, लेकिन साहब तो हिमालय की तरह अडिग रहे। हिले तक नहीं। इतनी ताकत थी तभी तो साहब आज तक टिके रहे…और आज वही इस तरह !

मंजुला : मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा। मुख्यमंत्री बनने की खुशी मनाने चली थी, तो यह बखेड़ा खड़ा हो गया।

सुवाम : नहीं। यह उनके स्वभाव में नहीं है, भाभी !

मंजुला : पर जो कुछ हुआ है, वह तो सच है, तब क्या ?

(मुरारराव सिदकर को पकड़े हुए धीरे-धीरे आते हैं। सिदकर ने एक बड़ी पेंट, टाई से बांधकर पहनी हुई है। चेहरा ब्लैंक।)

मुरार : आ। बैठ यहाँ। (ऐसे बिठाते हैं। प्यार से थपथपाते हैं। बैठ। ले, कॉफी पी ले। (मंजुलाबाई सिदकर के हाथ में कॉफी का कप देने लगती हैं।) इधर ला। उससे पकड़ा नहीं जायेगा। (खुद सिदकर को कॉफी प्लेट मे उँडेलकर देने लगते हैं।)

सुदाम : मैं पिला देता हूँ साहब···

मुरार : नही। तुझसे नही होगा। (सिदकर को कॉफी पिला रहे हैं।) बच्चा है एकदम। कुछ नही कर सकता और जाने लगा था··· कैसे जाता बेटे? रास्ते पर भीड़ कितनी···ले, कॉफी ले···

सिदकर : (कॉफी पीने से जरा चुस्त हो कर उठते हुए) बस्स। (चलने लगता है।)

मुरार : अरे! फिर से कहाँ चला? सिदकर···(रोकते है।)

सिदकर : कौन रोक रहा है मुझे?

मुरार : नही सिदकर, ऐसे मत जाओ···

सिदकर : साला, उल्लू का पठ्ठा!

(सिदकर यह मुरारराव से कहता है, और मुरारराव शॉक्ड।)

सुदाम : (शर्ट की बाँहे ऊपर करते हुए! ऐं किसे कह रहा है उल्लू का पठ्ठा? राज्य के मुख्यमंत्री हैं वे···

सिदकर : उल्लू का पठ्ठा!

सुदाम : अदब से बात कर!

मुरार : जाने दे, सुदाम। होश में नही है वो।

सिदकर : कौन कहता है मैं होश मे नहीं हूँ? उँगलियाँ दिखाओ बराबर गिनता हूँ। बोलने का काम नही। दिखाओ उँगलियाँ, दिखाओ!

मुरार : हाँ हाँ। तू बिल्कुल होश में है, सिदकर···

सिदकर : हाँ ऽऽऽ।

मुरार : इसीलिये तो कह रहा हूँ तू खाना-वाना ठीक से खा ले···
सिदकर : हट् ऽऽ!
मुरार : हमारा तुम्हारा एक अलग ही रिश्ता है। है ना सिदकर ?
सिदकर . तुम्हारा होगा, अपन का नहीं।
मुरार : मैं जिन्दा हूँ, मुख्यमंत्री हूँ, उसका कारण मेरे पेट की स्वस्थ किडनी है···जो तूने दी है···तूने···बदले में कुछ भी नहीं माँगा जिसके···
सिदकर : साली चप्पलें···
मुरार : सिदकर, आज तू यहाँ से खाली हाथ नहीं जायेगा।
(यह सुनकर सिदकर लड़ने के लिये तैय्यार हो जाता है।)
मतलब तू जा नहीं सकता···तेरा जाना ठीक नहीं होगा—
सिदकर : दरवाजा कहाँ गया ?
मुरार : मिल जायेगा बाद में।
सिदकर : नहीं। पहले मिलना चाहिये। और चप्पलें···वो भी···
सुदाम : (धीरे से) अब आप बोलिये नहीं साहब ! जब दरवाजा ही नहीं मिलेगा तो जायेगा कैसे···खाना तैय्यार होने तक यहीं घर मे फिरता रहेगा···हाँ···
(सिदकर किसी चीज से टकराकर गिर पड़ता है।)
मुरार : (आगे हो कर) अरे अरे···(पास जाकर सम्भालते हैं।) चोट तो नहीं आई सिदकर ? कहाँ लगी ?
सिदकर : (पेंट की जेब टटोलते हुए) पैसे···पैसे गये···चप्पलें भी गईं···दरवाजा गया···साला···क्या मजाक है···मजाक ही है···(उठने का प्रयत्न करता है।) पैर भी···गये···
मुरार : (भावुक स्वर मे) चिन्ता मत कर तू सिदकर, बेशक सब कुछ चला जाये, तो भी मैं हूँ···मैं हूँ तेरा···इस राज्य का मुख्यमंत्री···तेरे पीछे···पर्वत की तरह खड़ा हूँ···
सिदकर : (देखता रहता है। इशारे से पास बुलाता है। मुरारराव के पास

आते ही आँख मारते हुये) डरो मत—मैं भी तुम्हारा हूँ···

मुरार : हो ना ?

(मुरारराव की तरफ देखकर सिदकर चुम्बन लेने का संकेत करता है।)

मंजुला : यह क्या ? कोई देख लेगा तो क्या कहेगा···

मुरार : कहने दो। अब मैं उसकी फिक्र नहीं करता मंजुला ! एक अलग ही माहौल में पहुँच गया हूँ मैं। सच्चे प्रेम के संसार में···

मंजुला : इसका और आपका प्रेम !

मुरार : हाँ, इसका और मेरा प्रेम ! दिव्य प्रेम ! एक खून का प्रेम मंजुला ! एक ब्लडग्रुप का प्रेम ! किडनी की शल्यक्रिया के एक कोमल तंतु से हम बँध गये हैं, है ना सिदकर ?

सिदकर : (हाँ में सिर हिलाता है) आय लव्ह यू ! (बेसुरा गुनगुनाने लगता है।)

मंजुला : कब तक चलेगा यह तमाशा ?

मुरार : सिदकर ! आखिर हम दोनों के मन एक हो गये, अच्छा हुआ। शरीर तो पहले से ही एक हो चुके थे।

सुदाम : (मंजुलाबाई से) ऐसा वैसा कुछ नहीं भाभी ! आप इसका सीधा-साधा अर्थ समझो···हाँ···

मुरार : सिदकर, सिदकर आज का दिन बहुत मूल्यवान है।

सिदकर : (इंग्लिश म्यूजिक गाने का प्रयत्न करता है।)

मुरार : गा, मेरे पंछी ···गा···मेरे प्राण गा···

मंजुला : (सुदाम से) अब मुझसे नहीं सुना जाता···

सुदाम : यह सब "वैसा" नहीं—सीधे अर्थों में···

मुरार : (सिदकर के गले में बाँहे डालकर) अब अपने दिव्य प्रेम से हम त्रैलोक्य प्रकाशित कर देंगे—अपने प्रेम के बूते ९३८ का ऐसा कल्याण कर डालता हूँ···विरोधियों को निकाल देता हूँ—घर के भेदियों की चमड़ी उधेड़ता

तू मिल गया···सच्चे मानों में दिल ने दिल की राह पा ली—(उसे हल्के-से छूकर) तेरी जात कौन-सी है सिदकर ? जरूर ही वह नीची होगी—इसका मतलब हमारा यह शारीरिक सम्बन्ध समाजवाद कहलायेगा—हर जाति के लिए एक अच्छा उदाहरण रहेगा—क्रान्तिकारी कहलाएगा—

मंजुला : (जल्दी से) भाई साहब, मैं जरा अन्दर खाने की तरफ देखती हूँ—(अन्दर चली जाती है।)

मुरार : क्यों सुदाम, तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा यह सब देखकर ?

सुदाम : आपको नहीं हो रहा ?

मुरार : युगों-युगों के बन्धन हैं यह—सिदकर और मैं—दो शरीर—किडनी एक—नहीं। आत्मा एक। कितनी शान्ति महसूस हो रही है।

सुदाम : (धीरे-से) साहब, यह सब ठीक है, लेकिन बाहर किसी को पता चल गया तो बहुत बड़ा स्कैण्डल होगा···

मुरार : स्कैण्डल ? इसमें कौन-सा स्कैण्डल ? कैसा स्कैण्डल ? यह तो दुनिया का सबसे पवित्र रिश्ता है, सुदाम !

सुदाम : पर लोगों की समझ में भी तो आना चाहिये···

मुरार : इसमें ना समझने की क्या बात है ? सिदकर और मैं···मैं और सिदकर—

सुदाम : (गला साफ करते हुए) आखिर आप दोनों पुरुष हैं साहब।

मुरार : तो ? (एकदम ध्यान में आकर) सुदाम इतनी बुरी नजर ? छिः, छिः।

सुदाम : अपने बारे मे नहीं, लोगों के बारे में बात कर रहा हूँ।

सिदकर : क्या कोई गड़बड़ है ?

मुरार : कुछ नहीं भैया। अभी खाना आता है, हम दोनों खाएँगे। (सुदाम अनजाने ही कानों मे उँगलियाँ डाल लेता है।) और मजे से डकार लेंगे। ऐसा पाठ स्कूल मे पढ़ा था हमने। स्कूल

की एक-एक याद ताजी हुई जा रही है। अभी पढ़ने की इच्छा थी, पर वहीं पढ़ाई खत्म हो गई।

सिदकर : (मुरारराव की तरफ निर्विकार रूप से देखते हुए) उल्लू का पट्ठा! (मुरारराव सैल्फकॉन्शस हँसते हैं।) उल्लू का पट्ठा! उल्लू का पट्ठा!

मुरार : (जरा अस्वस्थ होकर, दूर से देखते हुए नौकरों को) क्या है रे? जल्दी-से खाना लाओ पहले—भागो—यहाँ क्यों खड़े हो—

(नौकर दौड़कर अन्दर चले जाते हैं।)

सिदकर : (मुरारराव की तरफ उसी तरह देखते हुए) उल्लू का पट्ठा!

मुरार : (ध्यान ना देने का प्रयत्न करते हैं) खाना आता ही है सिदकर···

सिदकर : उल्लू का पट्ठा!

मुरार : अरे सुदाम तुम बैठो ना···खड़े क्यों हो? आँ? खड़े क्यों हो तुम?

सिदकर : उल्लू का···पट्ठा!

सुदाम : मैं जरा चलूँ साहब। खाने का क्या है, कभी बाद में खा लूँगा—कल, परसों कभी भी—मैं तो घर का ही हूँ—जरा थोड़ा पार्टी का काम था—अभी-अभी याद आया—मैं तो भूल ही चला था—

मुरार : क्यों? रुक जाओ ना—

सिदकर : (ऊँची आवाज से) ए उल्ल के···पट्ठे!

सुदाम : नहीं—अन्दर भाभी को बता दूँ—सुबह आऊँगा—सुबह—अब आज्ञा दीजिये—जाता हूँ—

(जल्दी से अन्दर चला जाता है।)

सिदकर : (मुरारराव की तरफ ब्लैंकली एकटक देखता है। फिर हँसते हुए) उल्लू का पट्ठा!

मुरार : (स्वर दर्द से भरा हुआ) जब तुम ऐसा कहते हो भैया···और *वो भी किसी के सामने—तो यूं ही गलतफ़हमी हो जाती है।* लोगों को क्या पता अपना रिश्ता ?

सिदकर : रो तू। रो। अच्छी तरह रो।

मुरार : तुमसे मैं आदर की अपेक्षा नहीं करता···अपना रिश्ता ही अलग है—मैं कुबूल करता हूँ कि मैंने कुछ पाप जरूर किए होंगे—आखिर राजनीति है—सेर को सवा सेर होकर दिखाना पड़ता है राजनीति में···यह सज्जनों का क्षेत्र नहीं है ···पर जब और लोगों के सामने···कुछ भी हो, इस राज्य का *मुख्यमन्त्री हूँ मैं—*

सिदकर : और जोर से रो।

मुरार : *सिर्फ इतना लिहाज करना, और हमें कुछ नहीं चाहिये···हम* दोस्त···हम भाई···एक थाली में खाएँगे—

सिदकर : जोर से रो।

मुरार : नहीं···(भावना-भरे स्वर में) भैय्या···भैय्या···(रोने लगते तभी नौकर आ जाता है। एकदम सम्भलकर) क्या है रे? क्या है?

नौकर : (सकुचाकर) खाना···खाना लगा दिया है···

मुरार : आ रहे हैं, चल—चल भैय्या—

(अँधेरा। सफेद परदे पर प्रकाश।

टेलिविज़न पर खबरें। खबरें पढ़ने वाला :

"नए मुख्यमन्त्री श्री मुरारराव का अभिनन्दन करने के लिए उनके निवास स्थान पर सुबह से ही उनके चाहने वालो की भीड़ लगी हुई थी—"

मुख्यमन्त्री को हार फूल आदि देने के दृश्य। उनका हंसता हुआ चेहरा।

भूतपूर्व मुख्यमन्त्री ने नए मुख्यमन्त्री के विषय में एक पत्र में

अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा है कि कामगर वर्ग से आने वाले इस मुख्यमन्त्री द्वारा सही मानों में इस राज्य का बहुमुखी विकास होगा, ऐसी आशा मैं व्यक्त करता हूँ। इसी प्रकार के उद्गार नए मुख्यमन्त्री ने भी भूतपूर्व मुख्यमन्त्री के लिए व्यक्त किए और कहा कि उनके द्वारा शुरू किए गए पुनीत कार्य हम पूरे करके छोड़ेंगे—"

सफेद परदे पर अँधेरा।

अँधेरा।

प्रकाश। घड़ी में पन्द्रह या तेरह घण्टे बजते हैं। मुराररराव और सिदकर अन्दर से बाहर आते है। मुराररराव सन्तुष्ट हैं। नाइट गाउन पहना हुआ है।)

मुरार : (डकार लेते हुए; पानदान लेकर पालथी लगाकर बैठता है।) तू हमारे यहाँ आया, तूने हमारे साथ चार कौर खाना खाया, हमें इससे अपना आज का दिन कुछ सार्थक हुआ-सा लग रहा है। आज बहुत-बहुत खुश हूँ मैं।

सिदकर : दरवाजा उधर है ना ?

मुरार : क्या हुआ ?

सिदकर : चलता हूँ।

मुरार : कहाँ जा रहे हो ?

सिदकर : जाना चाहता हूँ यहाँ से।

मुरार : अभी ?

सिदकर : हाँ। जाऊँगा।

मुरार : पर···जरा रुक जाओ। पान खाकर जाना···।

सिदकर : नही (जेबें टटोलने लगता है) साला···

मुरार : क्या हुआ (कोई बात ध्यान में आते हुए) लेकिन मुझे तुझसे जो कहना था, वह अभी बाकी है। मतलब अभी तक तू··· वैसे ठीक नही था।

सिदकर : (चौकन्ना होकर फिर से जेबें बड़ी उत्सुकता से टटोलता है।)

मुरार : (यह सब देखते रहते हैं। फिर गला साफ करते हुए) तो भैय्या ! यह मौका देखते हुए एक-दो बातें कहना चाहता हूँ तुझसे, सुन रहा है ना तू ?

(सिदकर अब पागलों की तरह जेबें बार-बार उलट-पुलटकर देख रहा है। इस वक्त उसका ध्यान कहीं नही है। जेबें उलट-पुलट करने की गति और तेज हो जाती है।)

मुरार : भैया··· (सिदकर का ध्यान नही है।)
भैय्या··· (सिदकर का ध्यान नहीं है।)
तो भैय्या···

(अत्यधिक गति से सिदकर वही जेबें उलट-पुलट करने में लगा हुआ है।)

मुरार : (भावना से भरे हुए, और कुछ भयभीत होकर यह सब कुछ देख रहे हैं।) जो तुझे चाहिये वह उसमें नही मिलने वाला भैया। उसमें वह है ही नही। क्योंकि मैंने वह निकाल लिया है। जरा यहाँ बैठ और मेरी बात ध्यान से सुन। तेरी ही भलाई की बात हम करने जा रहे हैं।

(कोई असर नही है। सिदकर अद्‌भुत गति से अपने काम में लगा हुआ है। एकदम रुककर जेबें टटोलने के लिए निकाली हुई कमीज, वह गुस्से से जमीन पर पटकता है। मुरारराव की तरफ लड़ने के इरादे से देखता रहता है।)

सिदकर : (जोर-से दाँत भीचते हुए) उल्लू का पट्ठा···

मुरार : (जरा घबराकर) भैया···(धीरज करके सिदकर की तरफ पान बढ़ाते हुए) ले पान ले। (सिदकर लड़ाई के इरादे से मुरारराव की तरफ देखता रहता है।) भैय्या पान ले।

(सिदकर एक तरफ थूकता है, और उसी लड़ाई वाले पोज मे

खडा है।) ले पान ले भैय्या…खुद अपने हाथों से मैंने बनाया है। (सिदकर पैर से मिट्टी कुरेदने जैसा कुछ करता है। क्रोधी मुद्रा में ही।) मैं…मैं डालूँ पान मुँह में ? कर, आ कर…कर आ…आ देखूँ…इधर कर मुँह…इधर…उधर नही इधर…

(सिदकर और मुरारराव, उसी जगह पकड़न-पकड़ाई जैसा करते हैं और सिदकर एकदम से टारजन की तरह चिल्लाकर दौड़ते हुए बाहर निकल जाता है।

मुरारराव अन्दर जाने वाला दरवाजा ठीक से बन्द करके टुथ-प्रिक से दाँत कुरेदते हुए चुप बैठे रहते है। सिदकर वापिस आकर चिढा-सा खडा रहता है।)

आ गए भैय्या। आ बैठ। दरवाजा बन्द है ना ? सभी दरवाजे बन्द हैं ? तेरे सारे इरादे जानते हुए सारी व्यवस्था पहले ही कर दी थी मैंने। यूँ ही थोड़े मुख्यमन्त्री बन गया मैं ? सत्ता की गोली खाकर मस्त हुए पहले मुख्यमन्त्री से भी तेज निकला मैं, वो तो बैठ गया हाथ मलते हुए। अब तो बैठेगा ना भैया ? नही तो खड़ा रह चल।

(सिकदर जबरदस्ती बैठ जाता है।) मेरी बात सुनकर तू जरा विचार करने लायक रहे। इसीलिए तो मैंने तेरी जेबों से गोलियाँ निकलवा ली थीं। (सिकदर उठना चाहता है।) बैठ भैय्या। (जमीन पर पड़ी उसकी कमीज उठाकर उसकी तरफ फेंकते हुए) यह डाल ले। गोलियाँ चाहिए हों तो तुझे मेरा कहना सुनना पड़ेगा। (सिदकर बड़ा अनमना-सा होकर कमीज डालता है।) अब मैं बोलना शुरू करता हूँ। (उठकर एक तरफ रखा हुआ पैड और बॉलपेन लाकर बैठ जाते हैं।) अगर कोई शंका हो तो एक हाथ ऊँचा उठाना। ऐसे। (हाथ ऊँचा करके दिखाते हैं।) जब मैं पूछूँ तभी अपनी

बात बताना। तो भैया, किसी एक संयोग से हम इकट्ठे हुए। शरीर मिले—मतलब ब्लड-ग्रुप, किडनी वगैरा, तब मैं मुख्यमन्त्री नही था। मैं मुख्यमन्त्री बनूंगा ऐसा तो किसी ने सोचा भी नही था। खुद मैंने भी नहीं सोचा था, दूसरों की तो बात ही क्या? जब मैं मरने लगा था, तब डॉक्टरों ने एक विशिष्ट ब्लड-ग्रुप का विज्ञापन देकर एक ट्रैप या एक किस्म का पिंजरा लगाया था और उस पिंजरे मे तू अपने-आप खिंचकर चला आया···बिना किसी के बुलाये···बिना कोई माँग किये···वैसे देखा जाय तो लालच के लिए भी उस वक्त उस पिंजरे मे कुछ रखा नही गया था। एक किडनी खोकर तू चला गया। और फिर तेरे लिए जाने-अनजाने मेरे दिल में एक अजीब-सा अपनापन घर कर बैठा। इसीलिए दूसरा पिंजरा तेरे लिए बनाया गया। मुख्यमन्त्री बन जाने के बाद जिस नए विज्ञापन मे तू फँसकर यहाँ चला आया। (यह सारी बातें चल रही हैं, लेकिन सिदकर का ध्यान उधर नही है। सिदकर बारी-बारी से एक हाथ बार-बार ऊँचा कर रहा है।) कुछ कहना है?

सिदकर : गोलियाँ, गोलियाँ!

मुरार : बाद मे। हाँ तो फिर अपने मुद्दे पर आते हैं हम। अब तू यहाँ से आसानी से नही जा सकता। इस वक्त मैं जो कुछ भी चाहूँ, कर सकता हूँ, मसलन तुझे दहशतवादी कहकर सरक्षण कानून के अधीन अभी इसी समय जेल, या गद्दार कहकर हमेशा के लिए देश-निकाला! लेकिन अधिकार इस्तेमाल करने की आदत होते हुए भी मुझसे यह नही हो सकेगा, क्योंकि तेरे लिए मेरे दिल मे कृतज्ञता की भावना है। यह अनुभव कुछ अलग ही है। लेकिन राजनीति की कृतघ्नता-भरी जिन्दगी मे यह चेंज मुझे अच्छा लग रहा है।

(सिदकर दोनों हाथ ऊँचे करके पागलों की तरह उन्हें हिला रहा है।) हाथ नीचे कर भैय्या, और आगे सुन। आज मैं तेरे लिए ऐसा कुछ करना चाहता हूँ, जिससे मुझे कुछ सन्तोष मिले। वैसे मैं बड़ा असन्तुष्ट आदमी हूँ। हाँ, तो मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूँ ?

सिदकर : (हाथ नीचे करते हुए) गोलियाँ।

मुरार : या तो मैं एक ऐसी नौकरी तुझे दिलवा दूँ, जिसमे काम कम-से-कम हो, एअर कण्डिशन्ड कैबिन हो, मोटी तनख्वाह हो, बार-बार विदेश जाने का चान्स हो। (सिदकर उँगलियों से 'गोली' का इशारा करता है। अलग-अलग तरीकों से।) तू हाँ कह दे, तो मिल गई समझ। वैसे इस शहर की किसी आलीशान जगह पर कोई आलीशान फ्लैट भी मैं तुझे दिलवा सकता हूँ। तू चाहे तो उसे चौगुने किराये पर चढ़ा सकता है या उसमें औरतों से धन्धा करवा सकता है। (सिदकर की ओर से अब भी कोई उत्तर नही) नही ? जो कुछ मैं कह रहा हूँ, वो तू ठीक से सुन भी रहा है या नही ? जिन्दगी मे दुबारा तुझे यह सब कुछ सुनने को नही मिलेगा। अच्छा ये भी रहने दे, तू चाहे तो किसी अच्छे-से उद्योग का लायसेंन्स और वो भी बिना अपना हिस्सा रखे मैं तुझे दिलवा सकता हूँ। पूरी सोने की खान, तुझ अकेले को ! (वेट करके) यह भी नहीं ? चलो छोड़ो, तो फिर··· कॉन्ट्रैक्ट देने वाली किसी कमेटी का अध्यक्ष तुझे बनवा दूँ ? देख ले, कॉन्ट्रैक्ट देने के बदले मे तो सभी ऋद्धि-सिद्धियाँ हाथ जोड़े सामने खड़ी रहती है। कार, शराब, शबाब, इम्पोर्टेड टी० वी० सैट, फ्रिज, एअरकण्डीशनर, फर्निश्ड फ्लैट, इनमें से कुछ भी, या यह सब कुछ मिल सकता है। (थोड़ी देर रुककर) गोलियाँ खा-खा के तेरा तो दिमाग खराब हो गया है।

(सिदकर न बोलते हुए ओंठो के इशारे से 'नो' 'सी' यह शब्द बार-बार दोहरा रहा है। चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा कर रहा है।)
तू भी कमाल का है। अब एक और जबरदस्त ऑफर है, ठीक से सुन। राज्य के सहकारी बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर की पोस्ट! एक पूरे का पूरा वैभवशाली साम्राज्य! साथ में चमचों की लम्बी कतार, ऐसा ओहदा है यह कि वक्त आने पर मन्त्री तक झुक जाते हैं। कितनी बड़ी पोस्ट! और जो पहले बतायी थी वही सब सुख-सुविधाएँ। सिदकर की तरफ मुरारराव की पीठ है, पीछे ताली की आवाज। मुरारराव मुड़कर देखते हैं।) ये हुई ना बात! अब समझा तू! (सिदकर ने मच्छर मारा है।) नहीं इतने पर भी नहीं। तू आदमी है या हैवान? कोई महात्मा-वहात्मा समझता है क्या खुद को? और तो और महात्माओं के मुंह भी पानी आ जाता है···सत्ता के नाम पर! बड़े-बड़े रईसों से मिलने वाले मान-सम्मान के नाम पर! फिर तू किस खेत की मूली है? अब आखिरी मौका है···एक ही ऑफर···तेरा भरपेट कल्याण करने वाली ···खुद भगवान भी झड़प ले जिसे। जहाँ से बिना शर्त चुने जाओ ऐसी कौन्सटीचुएन्सी का टिकट—लोकप्रतिनिधि की सनद जेब मे रखकर मनमाना स्वार्थ साधने का एक पास! सत्ता से लेकर मत्ता तक जब जी मे आये, पांच साल तक तिजोरी खोलने की एकमात्र चाबी! बोल, हाँ बोल दे भैया —बोल दे हाँ—और समझ ले तुझे मैने वह दे दी।
(मुड़कर देखते हैं। सिदकर कुर्सी से गायब।)
अरे! कहाँ गया? कहाँ गया तू भाई?
(सिदकर टेबल के नीचे बैठा हुआ है।)
(ढूँढकर) वा. बेटे! ऐसा मजाक! बाहर निकल पहले। निकल बाहर!

(सिदकर वैसे ही टेबल के नीचे बैठा हुआ है। मुरारराव भी उसके सामने बैठ जाते हैं।)
लालच से तू बच नही सकता भैया ! यह सरासर कायरता है। यह तो रोने वाला खेल हुआ। बाहर आकर सिर्फ नम्बर बता। एक-एक नम्बर याने मेरा दिया हुआ एकाएक खजाना है खजाना ! बोल एक की दो, या दो की तीन, या फिर चार ? या पांच या सात ? कोई भी एक नम्बर बोल। बोल नम्बर। इक्का या छक्का ? सोच ले छक्का बुरा नहीं— (सिदकर वैसे ही चुप) नहीं ? अभी तक तेरा पत्थर दिल ललचाया नहीं ? अच्छा इनमें से कोई भी आकड़े एकदम दो —ठीक ! कम्पनी का दिवाला—एक में दो···एक मे दो··· कोई भी उठाओ···एक ही दफा दो का ब्रैकेट···चलो जल्दी करो···जल्दी करो··· (सिदकर पहले की तरह ही टेबल के नीचे चुप बैठा हुआ है।) एक और तीन ? दो और पाँच ? चार और सात ? या अगर चाहो तो छः और···छः ? या पांच ? कोई भी दो—कोई भी तीन—आखिरी मौका—तीन— जल्दी करो—उठाओ तीन कोई भी तीन—(सिदकर पहले की तरह ही चुप।) (मुरारराव पसीना पोछकर तेज साँस लेते हुए चक्कर लगाते हैं।) अच्छा। तुझे कुछ नही चाहिये ? कर्म से ही दरिद्री है तू। हठ की भी हद हो गई। बिना कुछ दिये सब कुछ मिल रहा है, वो इसे नही चाहिये। मुख्यमन्त्री का प्रत्यक्ष अपमान कर रहा है तू। अधिकार पाये हुए मुझे अभी चौबीस घण्टे भी नही हुए, लेकिन तेरी भलाई के लिए सत्ता का गैर उपयोग तक करने चला था मैं। तुझे इसकी जरा भी कद्र नही। बन्दर के सामने मोती डाल देने वाली बात हुई, यह तो। मेरी कोशिशें खत्म हुई, मैं हार गया। बाहर आ, जा अब। तू जा सकता है। तेरी गोलियाँ

वापिस कर दूंगा मैं।

(सिदकर टेबल के नीचे से बाहर आकर खड़ा हो जाता है।) हद से ज्यादा हठी है तू, लेकिन तुझे कुछ फायदा पहुंचाने की मेरी इच्छा अभी भरी नही। तेरे लिए नही, अपने दिल की तसल्ली के लिए मुझे तेरे लिए कुछ करना पड़ेगा। मेरे मन का बोझ मुझे हल्का करना ही पड़ेगा। मुझे अपनी आत्मा मुक्त करनी होगी। अपना कर्तव्य करना होगा।

(मुराररराव चक्कर लगा रहे हैं। अचानक मुराररराव सिदकर को नीचे सीधा गिरा कर उसकी छाती पर सवार हो जाते हैं।) भैया सिदकर! आखिर नाकामयाब होकर मुझे यह रास्ता अपनाना पड़ा। फेरीवाले की जिन्दगी मे फुटपाथ पर म्यूनिसिपैलिटी से अपनी जगह का गैर कानूनी हक लेने के लिये जो रास्ता अपनाना पड़ता था, वही रास्ता मुख्यमंत्री बन जाने के बाद भी अपनाना पड़ेगा, ऐसा मैंने स्वप्न मे भी सोचा नही था। लेकिन कभी-कभी सत्य स्वप्न कि अपेक्षा ज्यादा अद्भुत लगता है। आदन ना रहने के बावजूद भी मैंने आज इस रास्ते को अपना ही लिया। तेरे पैर पड़ूं या तेरी छाती पर सवार हो जाऊँ, इन दोनों रास्तो मे से मुझे यही रास्ता ज्यादा पसंद आया। तो अब मुझे वचन दिये बगैर तेरी छुट्टी नहीं होगी। आज मैं तुझे जो एक से एक बढ़िया चीजें पेश कर रहा था, तूने उनमें से एक भी स्वीकार नही की। लेकिन भविष्य मे जिस चीज की तुझे जरूरत होगी वो तू मुझ से ही मागेगा, यह वचन तुझे आज देना ही होगा। जब तक तू वचन नहीं देगा, तब तक मैं तुझे छोड़ूंगा नही। (टेलीफोन बजने लगता है। सिदकर की छाती पर बैठे-बैठे ही मुराररराव रिसीवर उठाते है।) (रिसीवर पर) कौन बसाले? पूरा शहर छान मारने पर भी तुम्हे वह नही मिला? तो फिर बैठे रहिये हाथ पर हाथ

धरे। वह नहीं मिला तो अपनी रिटायरमेंट पक्की समझिये। कुछ भी करिये, उसे ढूंढ़ निकालिये। बहाने बिल्कुल नहीं सुनूंगा। नहीं, अभी जरा काम में हूँ, सुबह, गुड नाईट, एण्ड स्वीट ड्रीम्स। (रिसीवर रख देते हैं।) बैठो चिल्लाते हुए बेटे, अच्छे पकड़ में आये हो। जब मैं फेरी वाला था तब यह फौजदार था, बहुत तंग करता था। अब चखाता हूँ इसे भी जरा मजा। (याद आते हुए) हाँ तो भैया…

सिदकर : जो चाहिए होगा मुझे। वो आप से माँग लूंगा। छोड़िये अब। छोड़िये। वचन देता हूँ। छोड़िये!

(मुरारराव उठ खड़े होते हैं। सिदकर भी जैसे-तैसे उठकर खड़ा हो जाता है।)

मुरार : तू राजनीति में नहीं है। इसलिये थोड़ा-बहुत सच जरूर बोलता होगा। मानना पड़ेगा।

सिदकर : साला, अब हमारी गोलियाँ दीजिये और दरवाजा खोलिये!

मुरार : दोनों की व्यवस्था है। चल!

(अन्दर जाने वाला दरवाजा खोलते हैं। सिदकर का हाथ पकड़ कर उसे बाहर जाने वाले दरवाजे की तरफ ले जाने लगते हैं। अन्धेरा। प्रकाश। रात। अकेले मुरारराव सोफे पर जरा कठिनाई से सोये हुये हैं। जोर-जोर से खर्राटें भर रहे है। मंजुलाबाई आती है।)

मंजुला : यह क्या? यहीं सो गये? कब गया वो? और हॉल का दरवाजा किसने बन्द किया था? मैं तो डर गई थी, आपको कहीं कुछ कर ही ना दे वो। उसका क्या भरोसा?

मुरार : (उठकर खुशी से) मंजुला जी हमने ही उसे कुछ कर दिया। वचन ले लिया, वचन—जिन्दगी में जब भी उसे कुछ चाहिये होगा, वो हमसे ही माँगेगा। सिर्फ हमसे।

(पैर पसार कर फिर सोफे पर सोने की तैयार करते हैं।)

मजुला : यह क्या ? वेड-रूम नहीं है सोने के लिये ? मंत्री बनो चाहे मुख्यमंत्री, पुरानी आदतें नहीं छूटेंगी मरी··· (मुरारराव को लेकर अन्दर चली जाती हैं।)

(सफेद परदे पर प्रकाश। परदे पर टी० वी० अनाउन्सर:— "यह थी कल के कार्यक्रमों की रूपरेखा। आज की सभा अब समाप्त होती है। कल शाम सात बजे तक के लिये आज्ञा दीजिये। नमस्कार।"

अनाउन्सर सस्मित नमस्कार करती है। उसके आँख मारने का आभास। सफेद परदे पर अन्धेरा।

रंगमंच पर भी परदा)

पहला अंक समाप्त

□□□

दूसरा अंक

(सफेद परदे पर प्रकाश। टी० वी० समाचार वक्ता और दृश्य।)

समाचार वक्ता : *यह खबरें हम दूरदर्शन सेवा केन्द्र से प्रस्तुत कर रहे हैं।* डिब्बेवालों की राष्ट्रीय परिषद् का आज शहर में बड़ी धूमधाम के साथ उद्घाटन हुआ। खास तौर से बनाये गये शाही शामियाने में एक सोने का डिब्बा खोलकर, माननीय मुख्यमन्त्री ने इस परिषद् के उद्घाटन की घोषणा की। अध्यक्षपद से बोलते हुए सांस्कृतिक और मछली उद्योग मन्त्री श्री रावसाहब पन्हाले ने कहा···पार्श्वभूमि में प्रदर्शनकर्ताओं की घोषणाएँ और शोर)

"शहरी संस्कृति को डिब्बेवालों की संस्कृति कहते हैं। जिसके हाथ में पालने की डोरी है," यह मुहावरा अब बदल गया है। 'जिस के सिर पर डिब्बों का भार, वही करेगा राष्ट्रोद्धार' अब यह नया मुहावरा चल पड़ेगा। पालने की डोर पकड़ने वाली, अब बड़े-बड़े दफ्तरों में जा कर मोटी-मोटी फाइलों का उद्धार कर रही हैं। फिर भी हमारा देहाती डिब्बेवाला··· शहरवासियों का अन्नदाता···वक्त आने पर प्राणों पर खेल जायेगा पर अपने काम से पीछे नहीं हटेगा, ऐसी गवाही मैं देता हूँ। क्योंकि वह मर्द है···वह राष्ट्रवादी है···([illegible] बी

गड़गड़ाहट ।)

(फिर से समाचार वक्ता)

राष्ट्रीय युवा संघ की तरफ से आज एक विचित्र प्रकार का जुलूस निकाला गया। देश की विकट परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपनी सब माँगें पाँच साल तक तहकूब रखी जायँ, यह माँग जुलूस के नेताओं ने मुख्यमन्त्रीजी से मिलकर उनके सामने रखी। जुलूस के राष्ट्रीय उद्देश्य का स्वागत करते हुए माननीय मुख्यमन्त्री ने नेताओं के साथ अनेक विषयों पर खुले दिल से बातचीत की।

शहर के चौक में आज एक पागल से इन्सान ने आत्मदहन करके थोड़ी देर के लिये वातावरण में तहलका मचा दिया। शायद वह इन्सान दूसरे के इलाके से आया था। 'मेरी शिकायतों पर पिछले तीन सालों से किसी ने ध्यान नहीं दिया, इसीलिये जिन्दगी से तंग आकर और निराश होकर मैं खुद को जला रहा हूँ।' ऐसी सूचना उस वक्त कुछ आदमियों ने पर्चियाँ बाँटकर दी। बताया जाता है कि पर्चियाँ बाँटने वाले उस मृतक के लड़के ही थे। पुलिस ने उन आदमियों को आम जगह पर गड़बड़ी मचाने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस का तपास जारी है।

दी। बताया जाता है कि इसके बाद सभा का काम-काज ठीक से चलता रहा। गोली-काण्ड के मृतकों की संख्या अब सात हो गई है…

सफाई कर्मचारियों की हड़ताल का आज सड़सठवाँ और समझौते की बातचीत का छियासठवाँ दिन है। आज भी दोनों पक्षों में बातचीत चलती रही। माननीय मुख्यमन्त्री ने संवाददाताओं से कहा 'हम अभी भी आशावादी है।' 'मुख्यमन्त्री समय बरबाद करके हड़ताल की सफलता को जानबूझ कर असंभव बना रहे हैं। 'हड़ताल फिर भी जोर-शोर से जारी रहेगी', ऐसा हड़ताल कर्मचारियों ने संवाददाताओं को बताया। आज मुख्यमन्त्री की पत्नी श्रीमती मंजुलादेवी ने शहर-सफाई अभियान के महिला संघ में दस मिनट भाग लेकर सफाई करने वाली महिला स्वयंसेविकाओं से पूछ-ताछ की।

लायसेन्स के मामले को लेकर आज विधान सभा फिर से गूंज उठी। विरोधी दल द्वारा उपस्थित किया गया नया मुद्दा न मानते हुए माननीय सभापति ने कहा कि 'इसमें कुछ टैकनिकल कठिनाइयाँ होने के कारण यह नही माना जायेगा।' बाद में दिये हुए जोशीले भाषण में अपने विरोधियों पर चारों ओर से चढाई करते हुए मुख्यमन्त्री ने उनके सभी आरोप झूठे होने का दावा किया। "चरित्रहनन के ऐसे हीन प्रयत्नों पर बलि होकर कभी भी मैं त्यागपत्र नही दूंगा।" यह बात उन्होंने फिर एक बार गरज कर कही। सत्तारूढ़ पक्ष ने इस घोषणा का स्वागत बड़े जोर-शोर से किया। इस पर विरोधी पक्ष ने सभा का त्याग कर दिया।

लायसेन्स के मामले में आज पुलिस ने शहर के प्रमुख व्यापारी और अंध सेवा समिति के अध्यक्ष श्रीयुत नानालाल जमनादास को गिरफ्तार कर लिया और बाद में उन्हें जमानत पर छोड

दिया गया। लायसेन्स के मामले में पकड़े गये व्यापारियों की संख्या अब आठ हो गई है।

शहर के संवाददाताओं द्वारा आयोजित एक चाय पार्टी में मुख्यमन्त्री ने लायसेन्स के मामले को जड़ से उखाड़ फेंकने का आश्वासन दिया। देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के बारे में उन्होंने चिन्ता व्यक्त की। बाहर एकत्रित प्रदर्शनकारियों पर उस समय थोड़ी लाठी चलानी पड़ी।/इस लाठी काण्ड में लगभग पैंतीस लोगों के जख्मी होने का समाचार मिला है। इसके बाद महिला प्रदर्शनकारियों ने मुख्यमन्त्री को करीब डेढ़ घण्टे तक घेराव में रखा।

(सफेद परदे पर अँधेरा। रंगमंच पर प्रकाश। मुख्यमन्त्री के नये बँगले का सेट। रंगमंच पर मुरारराव टेलिफोन पर गरम। एक तरफ देसाई खड़ा है।)

मुरार : (रिसीवर मे गुस्से से) कुछ नही सुनूंगा। मुझे समझाने की जरूरत नही है सेठजी! सम्पादकीय का रुख सीधा है। कौन-सा? यह मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? मैं करप्ट हूं। यही और कौन-सा? आपका सम्पादक मुझे करप्ट कहता है। नही कैसे? यही कहना उसका मकसद है। मैं आपका काम करके करप्शन का एक नया आरोप क्यों लूं? मैं कुछ नही कर सकता। वेरी सॉरी। सम्पादक के विरुद्ध? मैं कौन हूं कहने वाला? आपका सम्पादक है वो। आप चाहे तो उसे रखें या फिर निकाल दें। मैंने भी अब कुछ मामलों में सख्ती बरतने की सोची है। (थोड़ी देर सुनते रहते हैं) आपका प्रश्न है, मैं कुछ नही कहूँगा। प्रोसीड् तो होइये, देखते हैं। हाँ; लेटर दीजिये, फिर मिलिये। ठीक है, मिलिये। देख लिया जायेगा। (रिसीवर रखकर देसाई से) जरा कड़ुवा घूंट पिलाया है तभी आया है ठिकाने? सम्पादक को पत्र दे रहा है, नौकरी से छुट्टी करवायेगा उसकी। वैसे

मैंने कुछ नहीं कहा उससे। मैं कौन होता हूँ कहनेवाला ?

देसाई : टैक्स के मामले में आपके बिना पार लगना मुश्किल है, यह बात उसकी समझ में आ गई होगी। आखिर है तो बनियां ना। अपना मतलब अच्छी तरह समझता है।

मुरार : चालाकी में तो मैं उसका बाप हूँ। सीधों से बेशक हम सीधे रहते हैं, लेकिन हमें कोई बुरा समझे तो···

देसाई : ठीक है साब, बिल्कुल ठीक है।

मुरार : इस फटीचर सम्पादक को मैंने ही फॉरन भिजवाया था शिष्ट-मण्डल में। दो कमेटियों पर भी लिया था। इसके अलावा इसकी लड़की की शादी में खुद शरीक हो कर सौ रुपये का तोहफा दिया था। आदमी तो दो कौड़ी का भी नहीं है। चोर कहीं का! सोचा, गरीब है, जाने दो। इतने पर भी मैं ही करप्ट ? कहता है सारे नियमों को तोड़कर यह लायसेन्स कैसे दिये ? मक्खन भी लगाता है, कहता है, "मुख्यमन्त्री के स्वच्छ चरित्र से हम पूरी तरह आश्वस्त हैं।"

देसाई : पर साब, वो अकेला नहीं है। उसकी क्या बिसात जो इतना सब कह दे ? उसके पीछे कौन-कौन किस-किस उद्देश्य से है, सुना ही होगा आपने ?

मुरार : हाँ, जानता हूँ मैं। वो रावसाहब··· (याद आने पर अत्यधिक रोषपूर्ण चेहरा।)

देसाई : और वो टी० टी०···

मुरार : टी० टी० का तो दिमाग खराब हो गया है आजकल···

देसाई : साब, और भी एक है उनके साथ।

मुरार : कौन ?

देसाई : अब क्या बताऊँ साब, बेकार चुगलखोरी का इल्जाम लगेगा।

मुरार : नहीं लगेगा। कौन है वो ?

देसाई : सबावतें।

मुरार : कौन सदावर्ते ?

देसाई : अपने सचिवालय का।

मुरार : परिचय विभाग का डायरेक्टर ? वो ?

देसाई : वही।

मुरार : उसका क्या ताल्लुक है ?

देसाई : उस सम्पादक के साथ उसके घनिष्ट सम्बन्ध है।

मुरार : अच्छा !

देसाई : सदावर्ते की कविताएँ उस दैनिक के रविवारीय परिशिष्ट में हमेशा छपती है। पिछले महीने कई बार वो सम्पादक और यह सदावर्ते, उस ब्लू-मून बार में रात को इकट्ठे बैठकर पीते भी दिखाई दिये थे। भगवान जाने पीते-पीते क्या बातें की होंगी ! इतनी रद्दी कविताएँ वो सम्पादक यूँ ही थोड़ी छाप देगा ? वो भी बार-बार। बदले में कुछ तो···

मुरार : सच कह रहा है।

देसाई : कोई ना कोई भेद की बात जरूर बताई होगी उस सदावर्ते ने···यूँ ही थोड़े सम्पादकीय लिखने की हिम्मत पड़ी होगी उस फटीचर सम्पादक की ?

मुरार : (जरा विचार मग्न। फिर एकदम फोन उठाकर) कौन ? मोगरे ? जरा परिचय विभाग के प्रमुख सदावर्ते से मिलाइये। ऑफिस में नही है ? घर पर मिलाइये। घर पर। (ठहर कर) घर पर भी नही है ? कहाँ है, पता लगाकर मुझे रिंग करने के लिये कहिये उसे। जल्दी। (रिसीवर रखकर) अभी छुट्टी कर देता हूँ।

देसाई : ऐसा मत कीजिए साब···बेचारा बाल बच्चों वाला है···

मुरार : घर के भेदी के लिये कोई क्षमा नही, देसाई। (हमारा ही अन्न खा कर, हम से ही बेईमानी ? (रिसीवर फिर से उठाकर) मोगरे, सदावर्ते जहाँ कही भी हो वही उसे सस्पेंशन आर्डर दे

दिये जायें।

मोगरे :. (लाइन पर) पर साहब··

मुरार : दीज आर माय ऑर्डर्स।

मोगरे : (लाइन पर) पर सरकारी नौकरी मे किसी पर कुछ आरोप लगे बिना···

मुरार : आरोप गये जहन्नुम मे। सदावर्ते को अभी से सस्पैन्ड समझो, बल्कि इसी मिनट से।

मोगरे : (जरा रुककर) अच्छा साहब, भेज देता हूँ ऑर्डर्स।

देसाई : (मुरारराव रिसीवर रखते है। उसी समय) उसकी जगह किसी और को सौंपने की भी तो व्यवस्था करनी पड़ेगी साब! कुछ भी हो काम में रुकावट नही पड़नी चाहिए। आजकल दिन ऐसे हैं···विरोधी दल वालों ने तो वैसे ही शोर मचा रखा है···

मुरार : उसकी जगह भरने के लिये कोई है तुम्हारी नजर में?

देसाई : एकदम बताना तो जरा मुश्किल है साब···लेकिन अगर आप कहे तो हो जायेगा कोई एक।

मुरार : नियुक्त कर दीजिये उसे।

देसाई : लेकिन···वो इस विभाग का नहीं है···

मुरार : यह हमारे ऑर्डर हैं। अर्जी दे दीजिये, एपॉइण्टिड लिखकर साईन कर देता हूँ। घर के भेदी को निकाल ही देना चाहिये।

देसाई : बहुत अच्छा साब! आपकी दूरदर्शिता के क्या कहने! ···एक पंथ दो काज!

मुरार : इतना कुछ करने पर भी, हम पर कुछ ना करने के इल्जाम लगाये जाते हैं।

देसाई : राजनीति है साब! लोग जलते हैं। आप की उन्नति चुभती है उन्हें।

मुरार : मैं अपने काम के बल पर बना हूँ, देसाई! आय एम ए सेल्फ

मेड मैन ! किसी से कुछ लिया-दिया नहीं मैंने।

देसाई : यही बात है। तभी तो कुछ लोगों को आप ज्यादा ही खटकते हैं। उस पर आपकी जात…

मुरार : वो मुझे भी चुभती है कभी-कभी। पर मेरा इस जात में पैदा होना, मेरे हाथ में तो नही है ?

देसाई : सही है…

मुरार : लेकिन मेरी पत्नी तो ऊँची जात की है ना ?

देसाई : इसी लिये तो आप और भी ज्यादा चुभते हैं लोगों को। भाभी साहिबा की जात, उनका रूप…इस उम्र में भी कैसी— (मंजुलाबाई बाहर से आती है। साथ में एक सिपाही। उसके पास शॉपिंग के बहुत से पैकेट्स।)

मंजुला : जाकर अन्दर रख दे। (सिपाही पैकेट्स लेकर अन्दर चला जाता है। मंजुलाबाई बैठते हुए) थक गई बाबा। महिला सभा से शहर-सफाई, वहाँ से क्लब, फिर वहाँ से परली तरफ की झोपड़ियों के लोगों से बातचीत…वहाँ की औरतों ने तो तंग ही कर दिया। गाड़ी छोड़ने का ही इरादा नहीं था उनका। कुछ तो आकर सामने लेट गई।

मुरार : घेराव डाला ?

मंजुला : आप का नाम लेने के लिये हठ कर के बैठ गई। (शरमा जाती हैं।)

देसाई : (उत्सुकता से) फिर ?

मंजुला : आपको मतलब ?

देसाई : नही, नही, ये बात नही…

मंजुला : (मुरारराव को) वहाँ से आते हुए मार्केटिंग भी करती आई। परदों के कपड़े एकदम टॉप मिले और कार्पेट्स तो वण्डरफुल हैं। ये उठवाकर नये बिछवायेंगे कल। फर्नीचर बहुत सुपर्ब था…मैंने तो झट से ऑर्डर दे दिया !

मुरार : वैसे जरूरत तो नहीं थी…जो है वो क्या बुरा है। नया ही तो है…

मंजुला : आप अपना दर्शन अपने तक ही रखिये, 'सादा जीवन उच्च विचार'। मुझसे नहीं होगा। कितने लोग आते हैं यहाँ। फॉरेनर्स भी आयेंगे। अपने देश की इमेज भी तो रहनी चाहिये दुनिया में। हमारा बंगला देखकर वो लोग क्या सोचेंगे? फिर प्रधानमन्त्री भी तो आ रहे हैं परसों…

मुरार : खूब याद दिलाई। देसाई, आई० जी० पी० बसाले का फोन मिलाना जरा…प्रधान मन्त्री की परसो मीटिंग के बारे में कहना है कुछ…

मंजुला : उन झोपड़ियों के सुधार कार्यक्रम के लिये.शुरू में कम से कम चार-एक लाख रुपये तो चाहिये होंगे हमें। सुना ना आपने? मैंने कमेटी में बता भी दिया है…

मुरार : क्या?

मंजुला : किसी भी तरह से दिलवा दूँगी।

मुरार : जरूरी कामों तक के लिये यहाँ पैसा नही है…

मंजुला : वो सब आप जानिये। मैंने तो कह दिया है!

मुरार : अरे लेकिन, ये क्या अपने घर के पैसे हैं?

मंजुला : झोपड़ियों का सुधार मेरे घर का काम तो नहीं है। इतने सुन्दर शहर पर वो एक कलंक है। फॉरेनर्स जब यहां आते होंगे, तो क्या सोचते होंगे? देश की इज्जत तो हमेशा ही महत्वपूर्ण होती है। मैं कुछ नही जानती, कुछ भी कीजिये, पैसे दिलवा दीजिये। मैं वचन दे चुकी हूँ। चार लाख से कम नही लूँगी। बाद में उद्योगपतियों और व्यापारियों से और भी ले लूँगी। इधर-उधर से जमा किये हुए चार पैसों पर वह लेडी रामराव कमेटी में अपनी शान बघारती फिरती है—और मैं मुख्यमन्त्री की पत्नी होते हुए किसी से पीछे क्यों रहूँ?

बेसाई : (फोन मिलाकर) साब, आई० जी० पी०—

मुरार : (रिसीवर में) कौन ? बसाले ! आज आपकी वजह से डेढ घंटे तक घेराव में फँसे रहे हम। महिला प्रदर्शिकाओं को हटाने के लिये महिला पुलिस ही नही थी वहाँ। कारण न्ही पूछ रहा हूँ मैं। अच्छा प्रधानमंत्री की पब्लिक मीटिंग की क्या व्यवस्था कर रहे हैं ? मीटिंग है, ये तो याद है ना ? पर व्यवस्था क्या कर रहे हैं ? कितनी ? चार रिजर्व बटॅलियन्स ? और सादे कपड़े वाले ? ज्यादा रखिये। कुछ ज्यादा तैनात कीजिये। सभा-स्थल पर सिटी की चार बटॅलियन्स काफी है। शहर में जितनी हो सके उतनी अधिक रखिये। साथ में कितने देने वाले हैं ? फिजा जरा गड़बड़ है. गफलत से काम नहीं चलेगा। मेरी नाक कट जायेगी। और देखिये हमारी घोषणाएँ जोर-शोर से घोषित होती रहे, इस काम के लिये बहुत लोगों की जरूरत पडेगी। विरोधियो के भी प्रदर्शन हैं। हमारी आवाजें उनसे ऊपर ना उठी तो बाद में पी० एम० हमारी बिन पानी की कर देंगे। नही, दल पर निर्भर नही रहना है। उसकी व्यवस्था अलग से की जायेगी। आपको जो काम बताये गये हैं, उनसे मतलब रखिये बसाले ! दूसरो के मामलो में पड़ना ठीक नही ! शहर के चौक मे प्रदर्शन करने वालों की खिचड़ी बड़े जोरो-शोरों से पक रही है। उस जले हुए आदमी की राख पी० एम० को नजर करने का इरादा है उनका। हमारे आदमी जोरदार होने चाहिये। समय आने पर लड़ने की तैयारी भी रखनी होगी। किसी भी हालत में पी० एम० तक राख नहीं पहुँचनी चाहिये। प्रधानमंत्री की कार चौक में रुकनी ही नही चाहिए। और वो जिम्मेदारी आपकी है। गाडी के नीचे एकाध मर भी गया तो उसे बाद में देख लेंगे। पुलिस की लिस्ट के लोग पकड़कर ले आइये। जरूरत पड़े तो दस-दस रुपये

दीजिये उन्हें। जरा-सी भी गफलत नहीं होनी चाहिये। उस दिन का पूरा कार्यक्रम ठीक से समझ लीजिये। देसाई मिलेंगे ही आप से। उनसे सलाह-मशवरा कर के सब कुछ तय कर लीजिये। (रिसीवर रख देते हैं।)

मंजुला : फिर कितने लाख देंगे ? झोपड़ियों के सुधार...

मुरार : (जरा चिढ कर) ओ मेरी माँ, मेरे सामने इससे भी बड़े सवाल हैं। (देसाई की उपस्थिति से संकोच कर) अब कैसे समझाऊँ आपको। अच्छा देखूँगा। लेकिन झोंपड़ी का सुधार माने क्या ? आप करने क्या जा रही हैं ?

मंजुला : पूरी झोपड़पट्टी के चारों ओर यूकलिप्टस की घनी झाड़ी लगाई जायेगी। झोपड़ियों पर सुन्दर-सुन्दर चित्र बनवाये जायेंगे। झोंपड़पट्टी के बच्चों और औरतों को अच्छे-अच्छे कपड़े बाँटे जायेंगे। यूकलिप्टस की झाड़ी से अन्दर की झोपड़ियाँ नजर नहीं आयेंगी। और वहाँ की बदबू भी यूकलिप्टस के सुगंध से दब जायेगी। इतने पर भी अगर किसी का ध्यान उस तरफ गया, तो सुन्दर-सुन्दर चित्रों से झोपड़ियाँ अच्छी दिखाई देंगी। बच्चे और औरतें अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए दिखाई देंगे।

देसाई : वा:, वा: ! याने सब कुछ एकदम बदल जायेगा, यूँ कहिये ना।

मंजुला : आपसे पूछा नहीं था, देसाई।

(फोन बजने लगता है।)

देसाई : (फोन उठाकर) यॅस—

मोगरे : (लाइन पर) मैं, मोगरे, साहब को दीजिये जरा।

देसाई : क्या बात है, मुझसे कहिये।

मोगरे : (लाइन पर) साहब हैं ना वहाँ ?

देसाई : (नाराजगी से रिसीवर मुरारराव को देते हुए) यह मोगरे, कभी-कभी बहुत नखरे दिखाता है, साब !

मुरार : (रिसीवर मे) हाँ। कौन? सदावर्ते? कौन सदावर्ते?

देसाई : वही साब, परिचय विभाग का प्रमुख। आपने जिसको सस्पैन्ड किया है।

मुरार (स्वर में कुछ सख्ती) हाँ। बोलिये'''बोल रहा हूँ। (गुस्सा हो कर) कितनी बार पूछेगे? हाँ, आप को सस्पैन्ड कर दिया गया है। जो कुछ भी कहना हो लिख कर दीजिये। चार्जशीट बाद मे दे दी जायेगी। दोष? और वो भी मुझी से पूछ रहे है? यू—आर—सस्पैन्डिड। खतम। नही, मिलने से कोई फायदा नही। कल सुबह किसी को चार्ज दे दीजिये। और फिर कभी अपना चौखटा सचिवालय मे नही दिखाइये। माइंड यू। कविता कीजिये कविता।

(रिसीवर रख कर) नॉन्सेंस! पूछ रहा था! अपराध क्या है? इतनी हिम्मत!

(यह सब कुछ सुनकर देसाई खुश है। मंजुलाबाई अन्दर चली जाती है।)

देसाई : (जहाँ मजुलाबाई बैठी थी वहाँ का एक अखबार उठाकर उसे कैज्युअली देखते हुए, अनजाने मे एकदम) बाप रे!

मुरार. क्या हुआ?

देसाई : नही, कुछ नही। ये—अखबार वाले—

मुरार अब और क्या हुआ? कौनसा अखबार है यह? गिरिराज! और क्या कीचड उछाली है उसने?

(अपसेट हो जाते हैं।)

मंजुला · (अखबार खोजती हुई अन्दर से आती है) भूल ही गई थी मैं तो। आते समय जान बूझ कर लाई थी—

मुरार : लाओगी ही। मेरे विरुद्ध कीचड़ जो उछला जाता है उसमे!

देसाई : भाभी साहिबा के कहने का मतलब यह नही था—

मुरार : तू उसकी तरफदारी मत कर। क्या लिखा है उस अखबार मे?

देसाई : कुछ नहीं, गंदा-सा एक कार्टून है—

मंजुला : (बेतहाशा हँसने लगती है, फिर एकदम रुककर गंभीर चेहरे से) कुछ नही। हँसी आ गई थी।

मुरार : समझ गया। मेरा कार्टून होगा। (देसाई) लिखा क्या है पढ़ो तो सही ?

देसाई : (बड़ी मुश्किल से सभ्य शब्दो मे बताने का प्रयत्न करते हुए) यही है सत्तारूपी मक्खन का भूखा—मोटा बिल्ला ! —यही है पा—(अड़ जाता है।) कुछ नही। हमेशा की तरह। और आता हो क्या है उसे, साब। उसका लेवल ही यही है।

मजुला : मेरा तो अब इन बातों से मनोरंजन होने लगा है। रोज का रोना कौन रोये ? लेकिन दिमाग कमाल का पाया है उसने। हर लेख में इतने नये-नये शब्द सूझते कैसे है उसे ?

मुरार : (गुस्से से) मेरा बस चले तो उसे जिन्दा ना छोड़ूँ—देश निकाला दे दूँ—

देसाई : (अखबार अच्छी तरह से तह लगाकर जेब में रखते हुए) लेकिन साब को इनके पीछे पडे रहने का टाईम कहाँ है ? हाथी चले अपनी चाल —

मुरार : (देसाई की जेब मे रखे अखबार को देखते हुए) वो अखबार पढ़ने के लिये तुझे टाईम है देसाई ?

देसाई : (अखबार जल्दी से निकालकर सोफे पर फेंकते हुए) ना ना साब···जब फेंक ही देना है तो घर जा कर कचरे की टोकरी में फेंक देता···उसमे पढ़ने लायक है क्या ? झूठ-मूठ के आरोप ···जिनका न कोई तुक है···बकवास···ट्रैश···

मुरार : हिम्मत हो तो आरोप लगा के देखें···जेल में ना डलवा दूँ ?

देसाई : इतनी हिम्मत होती तो लँगोटियाँ उतारने का ही काम क्यों करता ? (मंजुलाबाई से) माफ कीजिये भाभीसाहिबा···

मजुला : (सोफे पर पड़ा अखबार हाथ मे ले कर। उसे देखने मे मस्त।

एकदम उपर देखकर) क्या हुआ ?

देसाई : जरा अश्लील भाषा यूज कर बैठा—

मंजुला : कौन-सी ?

देसाई : यही—वो—लंगोटी—

मंजुला : इसमें अश्लील क्या है ? मेरे कहने का मतलब (अखबार की ओर इशारा करते हुए) यह सब पढ़-पढ़ कर आजकल मुझे कुछ महसूस ही नहीं होता···

मुरार : अन्दर जाकर जरा चाय भिजवाएँगी ? (मंजुलाबाई हाँ कहती हुई अन्दर चली जाती हैं। उठते हुए अखबार उठाने के इरादे से अखबार की तरफ एक बार देखती हैं, लेकिन फिर अखबार बिना उठाये अन्दर चली जाती हैं। मुरारराव देसाई से) तू जरा आई० जी० पी० वसाले की तरफ जाकर परसों की आम सभा का बन्दोबस्त देख आ···

देसाई : (उठते हुए) बहुत अच्छा···

(सोफे पर पड़े अखबार की तरफ एक क्षण देखता रहता है। फिर चलते हुए) गाड़ी लेकर जाता हूँ···

(देसाई जा चुका है। अब मुरारराव अकेले हैं। सोफे पर पड़े अखबार की ओर खिंचते हैं; उसे उठा लेते हैं। जल्दी से अखबार एक नजर देखकर, फिर ठीक से पढ़ने लगते हैं। चेहरे पर अनुरूप भाव आते हैं। बीच में मुट्ठियाँ भिंच जाती हैं। सर पर पसीना आ जाता है। टेलिफोन बजने लगता है। मुरारराव एकदम घबराकर अखबार अपने पीछे छिपाते हैं। फिर वहीं रखकर टेलिफोन उठाते हैं।)

मोगरे : (लाइन पर) हैलो, साहब···

मुरार : हाँ हैलो। (गला साफ करते हैं।)

मोगरे : रावसाहब मिलना चाहते हैं।

मुरार : (गुस्सा से) वो···

भोगरे : (लाइन पर) आने के लिये कह दूं उनसे साहब ?

मुरार : (गुस्से पर काबू पाते हुए) हाँ, और कर भी क्या सकते हैं। (रिसीवर रख देते हैं। फोन फिर बजने लगता है। रिसीवर उठाकर) अब और क्या है ?

भोगरे : (लाइन पर) टी० टी० आये हैं।

मुरार : रुकने के लिये कहिये उनसे। मैं जरा काम कर रहा हूँ। (रिसीवर रख देते हैं। फिर से अखबार की तरफ बढ़ते हैं। उसे फाड़ने लगते हैं। लेकिन फाड़ने की बजाय उसे फिर वहीं कहीं छिपा देते हैं। नौकर चाय ले कर आता है। मुरारराव गुस्से के मूड मे ही बैठे-बैठे चाय पीने लगते हैं। नौकर अन्दर चला जाता है। अन्दर से सुदाम आता है।)

सुदाम : नमस्कार साहब !

मुरार : (उसे देखते हुए) ओं···उधर से कैसे आया ?

सुदाम : यूँ ही, किसी खास वजह से नहीं। गाड़ी उधर के दरवाजे की तरफ पार्क की थी, इसीलिये उसी दरवाजे से चला आया। रास्ते में भाभी मिल गईं, रुककर दो चार बातें उनसे भी कर लीं···

मुरार : कैसी बातें ?

सुदाम : यही आम बातें—फर्नीचर, परदे···

मुरार : अच्छा ! (चाय पीते हैं। मूड डार्क है।) चाय लोगे ?

सुदाम : पी के चला था। और एक जगह चाय पीने जाना भी है। घेराव मे कोई विशेष तकलीफ तो नही हुई ?

मुरार : हुई भी होगी तो सहन करनी पड़ेगी। तेरे आने की कोई खास वजह ? सुबह विधान सभा में तो इकट्ठे थे हम···

सुदाम : जी हाँ। सच पूछा जाय—तो वैसे वजह खास कुछ नहीं···

मुरार : लेकिन कुछ तो जरूर होगी ?

सुदाम : हाँ, थोड़ी सलाह लेनी थी।

मुरार : मुझसे ?

सुदाम : जी हाँ, क्यों ?

मुरार : कुछ नहीं।

सुदाम : (जरा अस्वस्थ होते हुए) ऐसा क्यों पूछा आपने साहब ? जरूरत पड़ने पर मैं हमेशा आपसे ही सलाह लेता आया हूँ··· पिता की तरह माना है आपको···

मुरार : हाँ, हाँ। पूछ जो पूछना है।

सुदाम : (आँख ना मिलाते हुए) मतलब साहब···शायद आजकल··· (लड़खड़ाते हुए) मेरा फोन टैप किया जा रहा है···

मुरार : अच्छा !

सुदाम : सोचता हूँ, अगर सचमुच ऐसा है तो यह बड़ी अजीब बात है। वैसे···यह कोई मामूली बात नहीं···मतलब साहब, मैं एक फुलफ्लैज्ड मंत्री हूँ···दल की कार्यकारणी का मैम्बर हूँ···और एक निष्ठावान कार्यकर्ता हूँ—लोक प्रतिनिधि हूँ—ऐसा तो अंग्रेजों के राज्य में भी नहीं हुआ···

मुरार : अंग्रेजों के जमाने में तू तीन-एक साल का होगा···

सुदाम : मेरे कहने का मतलब यह नहीं है···अपने बारे में नहीं कह रहा हूँ मैं। वैसे ही जनरल बात कर रहा था। एक मंत्री का फोन टैप होने का मकसद···

मुरार : अच्छी बात नहीं है यह।

सुदाम : तब भी वह हो रही है··· (लड़खड़ाते हुए) और आप···आप जानते ही होंगे इसके बारे में···

मुरार : ऐसा क्यों सोचता है तू ?

सुदाम : अगर ना भी पता हो तो मुझे करैक्ट कर सकते हैं लेकिन गृह-मंत्रालय तो आप के ही हाथों में है···

मुरार : मुझे कोई जानकारी नहीं है !

सुदाम : आप कह रहे हैं इसलिए मान लेता हूँ···

मुरार : मान लेता हूँ याने [illegible] ? झूठ [illegible] ?
मैं झूठ बोल रहा हूँ ऐसा [illegible] हो तुम, सुदाम ?

सुदाम : ना···ना···बिल्कुल नहीं···

मुरार : अगर सोचते हो तो सीधा आरोप लगाओ।

सुदाम : नहीं···यह मकसद नहीं था मेरा···

मुरार : तेरे फोन के बारे में पूछ-ताछ कर लूंगा मैं। और कुछ ?

सुदाम : और···नहीं, कुछ नहीं···

मुरार : मतलब सिर्फ इसीलिए आया था तू ?

सुदाम : यूं ही चला आया था···

मुरार : यूं ही आया था ! तो बैठ ना।

सुदाम : जाना है जरा···चाय पार्टी में···

मुरार : अच्छा तो जा।

सुदाम : (अस्वस्थता) वैसे अभी थोड़ा समय है···

मुरार : जो करना है, उसे एक बार सोच ले सुदाम। बैठूं कि जाऊँ—यह रवैया ठीक नहीं। *(टेलिफोन बजता है। रिसीवर उठाकर)* रावसाहब आ गये ?

मोगरे : (लाइन पर) चल पड़े हैं साहब। लेकिन टी० टी०···

मुरार : बिठाये रखो उन्हें *(रिसीवर रख देते है। पानदान लेकर बैठते हैं। पान बनाने लगते है।)* पान खाओगे, सुदाम ?

सुदाम : (अभी भी अस्वस्थ है।) ना।

मुरार : तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारा फोन टैप करवाता हूँ ?

सुदाम : *(इस सीधे प्रश्न से हड़बड़ाकर)* अँ ? *नहीं, नहीं साहब*···
नहीं—बिल्कुल नहीं—

मुरार : तुम्हारे विश्वास का सबूत क्या है ?

सुदाम : विश्वास—मतलब···?

मुरार : पक्का विश्वास भी नहीं है ?

सुदाम : (जुबान लड़खड़ाते हुए) सच पूछा जाय तो···फोन टैप होता

है यह सच है—इस बारे मे मेरी जानकारी पक्की है ।

मुरार : और फोन टैप मेरे हुक्म से होता होगा—(*सुदाम कुछ बोलना चाहता है। लेकिन चुप रहता है।*) बोल ना। तू सोचता है मैंने ही तेरा फोन टैप करवाने का बन्दोबस्त किया है? यही सब जायजा लेने आया है क्या तू?

(सुदाम चुलबुलाते हुए खड़ा रहता है।)

मुरार : एक साथ काम करने वालों के लिए एक दूसरे पर ऐसा शक-शुबह करना ठीक नहीं है, सुदाम।

सुदाम : (चिढ़कर) मैं भी यही कह रहा हूँ—

मुरार : तब भी तूने मेरे बारे में इस तरह सोचा, जो तेरे पिता के समान है?

सुदाम : मैं भी क्या करता! वजह ही कुछ ऐसी थी—

मुरार : यह सही है सुदाम! तेरा फोन टैप होता है। मेरे ही दिये हुए ऑर्डर्स हैं।

सुदाम : लेकिन क्यों?

मुरार : मंत्रिमण्डल के हर मन्त्री का फोन टैप किया जाय, यह मेरे ही ऑर्डर्स हैं।

सुदाम : मेरा भी? जिसकी आप पर इतनी निष्ठा है···

मुरार : निष्ठा की कीमत भी तुम्हें मिल गई! उपमन्त्री से फुलफ्लैज्ड मन्त्री बना दिया है तुझे मैंने। पहले के मुख्यमन्त्री से की गई बेईमानी का इनाम।

सुदाम : बेईमानी तो सभी ने की?

मुरार : मना कौन करता है? इसीलिए सभी के फोन टैप करने के भी मेरे ऑर्डर्स हैं। जो एक बार बेईमान हो सकता है वह दोबारा भी हो सकता है, सुदाम!

सुदाम : (संकोच से) यह बात आप पर भी लागू हो सकती है·· बेअदबी के लिए माफ कीजिए—

मुरार : अभी पाइंट यह नहीं है, क्योंकि मैं मुख्यमन्त्री हूँ। कल मुझे मात देकर तू मुख्यमन्त्री बन जायेगा तो तेरे लिए भी बेईमानी का कोई सवाल नहीं रह जायेगा। लेकिन तब तक तो मुझे तुझ पर नजर रखनी ही पड़ेगी।

सुदाम : इसका मतलब, मुझ पर आपको भरोसा नहीं रहा ?

मुरार : असल में मुझे तुम पर भरोसा कभी था ही नहीं। सौदेबाजी में सौ फीसदी भरोसा करके चलना मुझे मेरे फेरी के धन्धे ने सिखाया ही नहीं। फिर भी औरों की बजाय तुझ पर मैं ज्यादा भरोसा करता था, क्योंकि कुछ समय तक तुझे मेरे सहारे की जरूरत थी, लेकिन अब जिसकी जरूरत खत्म हो चुकी है।

सुदाम : साहब··· (बहुत ज्यादा भावना से भर कर चुप हो जाता है।)

मुरार : अगर ऐसा न होता तो रावसाहब की अभिनन्दन सभा में तू इतने उत्साह से शामिल न होता। रावसाहब की सिद्धान्त-प्रियता और सेवा-भाव की इतनी मुँह भर-भरकर तारीफ भी न करता—

सुदाम : लेकिन···वो एक शिष्टाचार की बात थी···

मुरार : वही तो। मुझसे पूछे बिना अब तुझे यह सब सूझने लगा है।

सुदाम : साहब, आप तो जानते हैं कि राजनीतिक मामलों में रावसाहब और मेरी कभी बनने वाली नहीं है—उनके बारे में मेरी सही राय भी आप जानते हैं···

मुरार : मेरे बारे में भी शायद तेरी सही राय वे जानते हों। लेकिन वह सब मैं कहाँ जानता हूँ ? वही जानने के लिए ही तो फोन टैप करने की जरूरत पड़ी।

सुदाम : (दोबारा उठते हुए) चलता हूँ मैं···देर हो जायेगी···

(रावसाहब आते हैं। हाथ में चाँदी की मूँठ वाली छड़ी।)

रावसाहब : (झुककर) रामराम, रामराम मुरारराव ! कैसे हो सुदाम जी ?

मुरार : (सुदाम को एक तरफ ले जाकर धीरे से) इसके बारे में हम बाद में बात करेंगे। अभी कुछ मत बोल। अपनी पॉलिसी की तरह। समझे ?

(सुदाम ना समझकर भी यह सब कुछ सुन लेता है।)

अच्छा ! अब तू जा सुदाम।

(रावसाहब ध्यान से देख रहे हैं। सुदाम चला जाता है।)

रावसाहब : आज विरोधी दल को दरवाजे पर बिठा रखा है, मुरारराव !

मुरार : जिसकी जो सही जगह है वह उसे कभी न कभी दिखानी ही पड़ती है। आज इधर कैसे चले आये ?

(मंजुलाबाई बाहर आई हुई हैं—रावसाहब को देखकर फिर से अन्दर चली जाती हैं।)

रावसाहब : कोई खास वजह नहीं, इस तरफ से जा रहा था, सोचा मिलता चलूं। सुना स्त्रियों के घेराव में फँस गये थे आप ? वैसे बुरा तो नहीं है।

मुरार : सच कहा जाय, तो आपको ही होना चाहिए था मेरी जगह।

रावसाहब : अब हमें कौन पूछता है, मुरारराव ! हमें तो अब खत्म ही समझो—

मुरार : होम डिपार्टमेंट की ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं है।

रावसाहब : इतनी बारीक नजर रखते हैं हम पर ?

मुरार : मन्त्री हैं न आप। आपका संरक्षण ही तो सरकार का पहला काम है, रावसाहब !

रावसाहब : आपकी कृपा है साहब ! लेकिन देखा जाय तो सरकार का पहला काम मुख्यमन्त्री पर व्यर्थ के आरोप लगाने वालों को कड़ी सजा देने का होना चाहिए। बहुत कीचड़ उछालता है वो गिरिराज वाला आप पर। कोई दिखा रहा था आज अख-बार, लेकिन हमने तो पढ़ा नहीं। यूँ ही गन्दी नाली में कौन हाथ डाले ? कार्टून भी है शायद एक गन्दा। देखा या नहीं

आपने ?

मुरार : नहीं बाबा। इतना टाईम ही कहाँ है मेरे पास ?

रावसाहब : ठीक है। लेकिन इस पर अब कोई एक्शन लेने का समय जरूर आ गया है। आखिर हर चीज की कोई हद होती है—

मुरार : अऽऽच्छा !

रावसाहब : यह वाहियातपना जितनी जल्दी हो सके, खत्म होना चाहिए। केस कर दीजिये उस पर। कुछ भी हो आखिर हमारे राज्य के मुख्यमन्त्री हैं आप—

मुरार : ऐसा सोचते हैं आप ?

रावसाहब : कुछ भी कहिये, आप ने विरोधियों को बड़ी ढील दे रखी है— लोकतन्त्र वगैरह सब ठीक है—लेकिन—कोई हद होती है ?

मुरार : ठीक है, लेकिन किस कदर तक हद···?

रावसाहब : आप एक्शन ले ही डालिये, दया बिल्कुल मत दिखाइये— मुकदमा कर दीजिए उस पर मान हानि का—

मुरार : इससे और भी ज्यादा बिकेगा अखबार, यही न ?

रावसाहब : आँ ? ज्यादा बिक्री···

मुरार : वो गन्दी टीकायें लोग और भी ज्यादा शौक से पढ़ेंगे। मान-हानि के मुकदमे से हमारी और बदनामी होगी—विरोधियो के पौ बारह हो जायेंगे—और शायद हमें मुख्यमन्त्री पद से उठाकर बड़ी आसानी से फेंक दिया जायेगा—

रावसाहब : मेरे कहने का मतलब यह नहीं था—

मुरार : लेकिन यही सच है न ? रावसाहब आपकी सलाह के लिए मैं आपका बडा आभारी हूँ। हमसे आपको बड़ा प्यार है।

रावसाहब : हाँ हाँ, बेशक—

मुरार : गुप्त रिपोर्ट मे भी इसके काफी प्रमाण दिखाई दिए हैं हमें। खुद को धन्य मानते हैं हम।

रावसाहब : (विषय बदलते हुए) माँजी कहीं दिखाई नहीं दे रही ?

मुरार : आपकी माँजी ना ? अन्दर हैं।

रावसाहब : (उठते हुए) अच्छा। नमस्कार कह दीजिएगा। वैसे ही आ गया था। लेकिन विरोधियों के मामले में आप कोई कड़ा निर्णय लें, ऐसी मेरी बड़ी इच्छा है, मुरारराव !

मुरार : विरोधियों का मतलब विरोधी दल वाले ही या घर के भेदी भी ?

(कुछ क्षणों तक अजीब स्तब्धता। एकदम फोन बजने लगता है।)

रावसाहब : (निश्वा:स छोड़कर) फोन बज रहा है।

मुरार : (फोन के पास जाकर रिसीवर लेते हुए) यॅस मोगरे ?

मोगरे : (लाइन पर ऑकवर्ड होकर) साहब···

मुरार : टी० टी० न ? भेज दीजिए उन्हें अन्दर···(रिसीवर रख देते हैं।) विरोधी दल के विरोधी को बुलवा लिया है।

रावसाहब : बहुत इन्तजार करवाया।

(टी० टी० आते हैं।)

मुरार : आइये टी० टी० ! माफ करना। हाँ, आपको थोड़ा इन्तजार करना पड़ा—

(टी० टी० चुप हैं। जेब से एक छोटी-सी पुड़िया निकालकर उसमें से बभूत जैसी कोई चीज रावसाहब के माथे पर लगाते हैं।)

रावसाहब : कैसी भभूत है, सत्यसाईं बाबा की है क्या ? आखिर आप भी उस रास्ते पर चलने लगे···

(टी० टी० मुरारराव के माथे पर भभूत लगाते हैं)

टी० टी० : और क्या करें ?

रावसाहब : अच्छा है, बहुत अच्छा है। जीवन में किसी न किसी शक्ति पर श्रद्धा होनी ही चाहिए। अच्छा, चलते हैं हम मुरारराव। दी हुई सूचना पर थोड़ा विचार कीजिए। राज्य की और दल की

भलाई को देखते हुए ऐसी सूचना देना जरूरी समझा। भूल भी हो सकती है हमारी… अच्छा चलता हूँ।

(झुककर प्रणाम करके चले जाते हैं।)

मुरार : कैसे हो टी० टी०, आजकल तो कभी इधर आना ही नहीं हुआ आपका…

टी० टी० : यहाँ एक मित्र रहा करते थे हमारे। आजकल वो यहाँ नहीं रहते।

मुरार : (यह बात बुरी लगती है) अच्छा ? कहाँ गये वो ?

टी० टी० : कौन जाने कहाँ गये। यहाँ नहीं रहते।

मुरार : तो आज आप यहाँ भूलकर आ गये हैं शायद ?

टी० टी० : नहीं, मित्र से मिलने नहीं आया था। मुख्यमन्त्री से मिलने आया हूँ।

मुरार : अच्छा, अच्छा ! क्या काम था मुख्यमन्त्री से ?

टी० टी० : एक काम तो हो चुका !

मुरार : कौन-सा ? (थोड़ा रुककर) वो भभूत ?

टी० टी० : हाँ। (बची हुई भभूत की पुड़िया देते हुए) यह बची हुई भी रख लीजिए। प्रधानमन्त्री के लिए।

मुरार : प्रधानमन्त्री के लिए ?

टी० टी० : पवित्र भभूत है ! किसी बाबाजी की नहीं ! खुद को जिन्दा जला डालने वाले एक इन्सान की है, इस देश के एक अभागे प्रजाजन की है।

मुरार : (उठकर खड़े हो जाते हैं। तीव्र स्वर में) टी० टी० !

टी० टी० : विरोधियों का यह एक और गन्दा कारनामा है, यही आप कहेंगे न ? लेकिन ऐसा कहकर उस मरने वाले गरीब का मजाक मत उड़ाइये, मुरारराव ! उससे उसके हालात ने ऐसा करवाया और यह हालात इस देश और इस राज्य की सरकार द्वारा ही तो पैदा किये गये है !

मुरार : सूखा राज्य द्वारा पैंदा किया गया है ?

टी० टी० : हां। अनाज का नही। अनाज का सूखा तो वैंसे भी हर साल अपने देश मे कही न कही पड़ता ही है। उससे निराश होकर कोई खुद को जला नही डालता। हमारे देश का आदमी बडा ढीठ है। लेकिन आपने जो सूखा पैंदा किया है वो आशा का है।

मुरार : ऐसा आप लोग तो कहेंगे ही। आप का काम जो बनता है इससे। सरकार द्वारा किये गये कामों की तरफ ध्यान ना देकर उसके द्वारा ना किये जाने वाले कामों को बढा-चढ़ाकर बताना —यही तो है आपकी राजनीति।

टी० टी० : वैंसे सरकार द्वारा किया गया कोई काम हम भूलते नहीं। मसलन सत्ताईस तारीख का गोली-काण्ड।

मुरार : (गुस्से से बेकाबू) उसके हालात आप जैंसे विरोधियों द्वारा पैंदा किये गये थे, टी० टी० !

टी० टी० : क्यों नही। इस सरकार को किसी भी तरह बदनाम करके उस से सत्ता खसोटना हमारे अस्तित्व के लिये जैंसे जरूरी है। लेकिन क्या अपना दिमाग गिरवी रखकर पुलिस द्वारा गोली चलवाना काबिले-तारीफ है ?

मुरार : कानून और व्यवस्था की दृष्टि से ऐसा निहायत जरूरी था। नही तो क्या दंगा-फसादियों के चुम्बन लेकर पुलिस उन्हें आलिंगन में लेती ?

टी० टी० : जो मारे गये वो क्या दंगा-फसादिये थे ? लंगडा भिखारी, सात साल का लड़का, घर के दरवाजे मे बैंठकर चावल साफ करने वाली गृहिणी···

मुरार : एक बार गोली चलनी शुरू हो जाये तो प्रत्येक गोली बिल्कुल निशाना लगाकर नही दागी जाती। उस पर वो इलाका घनी बस्ती वाला था। यह बात जानते हुए भी आप जानबूझ कर

चिल्ला रहे हैं टी० टी० ?

टी० टी० : फिर वही बात ! हम तो जानबूझ कर चिल्लायेंगे, लेकिन आपके जुनूनों से लोकहित कैसे हो सकेगा ? और वो लायसेन्स वाला मामला···

मुरार : उसकी चर्चा की यहाँ जरूरत नहीं—

टी० टी० : विधान सभा में भी आपने इसकी चर्चा नहीं होने दी—

मुरार : वो सभापति का निर्णय था।

टी० टी० : सभापति भी तो आपका था।

मुरार : यह सरासर आरोप लगाया जा रहा है···सभापति पर···

टी० टी० : लेकिन यह सच है।

मुरार : फिर खुले आम लगाइये आरोप। मैं आपको चेतावनी देता हूँ, टी० टी० !

टी० टी० : बेवकूफों की तरह ऐसी चेतावनियाँ स्वीकार करके जेल जाने की इच्छा नहीं है हमारी। लेकिन इतना तो आप भी जानते हैं मुरारराव कि आरोप एकदम सही है। व्यर्थ मुकरने से क्या फायदा ? लायसेन्स वाला झमेला भी सही है।

मुरार : अच्छा तो आज आप इसीलिये आये हैं ? इतने दिनो बाद ?

टी० टी० : आने का दूसरा कारण भी है। मैं आपको एक-दो सूचनायें पहले से देने आया हूँ।

मुरार : 'दोस्ती' की सूचनायें ?

टी० टी० : नहीं, सिर्फ सूचनायें। हमारे मित्र आजकल यहाँ नहीं रहते। सूचनायें माननीय मुख्यमंत्री के लिये ही है।

मुरार : क्या ?

टी० टी० : खुद को जला डालने वाले उस आदमी की राख लेकर परसों हम प्रधानमंत्री की गाड़ी के सामने लेटने वाले हैं। वो राख प्रधानमंत्री अपने माथे से लगायें, यह हमारी माँग होगी।

मुरार : ऐसा आपको करने ही नहीं दिया जायेगा। इसकी पूरी व्यवस्था

कर दी जायेगी।

टी० टी० : और हम यह करके रहेंगे। हमने भी इसकी पूरी व्यवस्था कर ली है। लायसेन्स-झमेले की चर्चा भी जब तक खुलकर नहीं होगी, तब तक विरोधी दल विधान सभा और विधान परिषद का काम ठीक से चलने नहीं देगा, आज हमने यह फैसला कर लिया है। कल से यह फैसला लागू किया जायेगा। हम पूरी ताकत से शोर मचायेंगे।

मुरार : (गुस्से में) बहुत अच्छा ! सूचनाओं के लिये मुख्यमंत्री आपके आभारी हैं।

टी० टी० : इससे अनेक विधायक बिल, बेकार बीच में लटक जायेंगे।

मुरार : उसकी फिक्र आप क्यों करते हैं ?

टी० टी० : क्योंकि आपकी तरह, अभी हम बेशर्म नहीं हुये। लोगों ने हमें अपने कामों के लिये चुना है, इसका हमे अभी पूरा अहसास है।

मुरार : हमारे लोकहित के प्रयासों पर भी तुम जहरीली टीका करते हो, क्या यह उसी का सबूत है ?

टी० टी० : वह टीका सिद्धान्त पर होती है, प्रयासों पर नहीं। मतलब वह टीका आप पर होती है।

मुरार : मतलब हम जनता की जो भलाई करते हैं, उसे आप नहीं चाहते—

टी० टी० : क्योंकि आपका सत्ता में रहना लोगों के हित में नहीं है, ऐसा हमारा विश्वास है। जो सरकार निरपराध लोगों पर गोलियाँ चलवाती है, जहाँ आदमी खुद को जिंदा जला डालते हैं और सरकार के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती, बल्कि वह समाज के भ्रष्ट सरमायेदारों और अपराधियों को सरक्षण देती है, और इसी भ्रष्टाचार की मिलीभगत के दम से अपना अस्तित्व बनाये रखती है, वह धोखे के सिवा और क्या हो सकती है ?

... : तो आप आ जाइये सत्ता मे, तब अच्छी तरह समझ जायेंगे कि

बेबुनियाद प्रतिक्रियायें दिखाना कितना आसान होता है…

टी० टी० : आप खाली तो कीजिये कुर्सियाँ, एक बार सत्ता देकर हमें एक्स्पोज करने के लिये। इसके लिये भी कुर्सियाँ नहीं छोड़ सकते आप? अरे कपड़े उतार लिये जायें तो भी कुर्सी पकड़े रहेंगे आप…। नंगे रह लेंगे, पर सत्ता के बिना नहीं सरेगा आपका—!

मुरार : (एकदम भड़क उठते हैं) स्टॉप इट! स्टॉप इट आय से! (कमीज की बाँहें ऊपर करते हुये) साला मैनचोद! बन्द करो बकवास नही तो…

टी० टी० : चलो हो जाने दो, मैं भी किसी कच्चे गुरु का चेला नहीं हूँ। (दोनों की पोज़ीशन द्वन्द्वयुद्ध की। नौकर आकर जल्दी से झाँकते हैं। यह सुनकर मंजुलाबाई भी अन्दर से आ जाती हैं।)

मंजुला : (देखकर) क्या हुआ? कौन है? टी० टी०!

टी० टी० : (ढीले पडकर) नमस्कार भाभी जी!

मंजुला : क्या हो रहा था? क्यो गुस्सा दिलवाया इन्हें? (मुरार राव से) आप शान्त हो जाइये। ब्लडप्रेशर की तकलीफ है आपको, इतना गुस्सा क्यों करते हैं? डॉक्टर ने क्या बताया है? बिल्कुल शान्त रहिये। दस मिनट तक आँखें बन्द करके चुपचाप बैठे रहिये यहाँ (उन्हें एक तरफ बिठा देती है। टी० टी० को जरा एक तरफ ले जा कर) आप क्यों नही समझते टी०-टी०! पहले से ही राज्य की जिम्मेदारी इनके सर पर है और आप है कि बेवक्त आकर आदमी को और गुस्सा दिलाते हैं।

टी० टी० : मैंने उन्हें गुस्सा नही दिलवाया। खुद ही गुस्सा हो गये। मैं तो सिर्फ हालात से वाकिफ करा रहा था उन्हे।

मंजुला : लेकिन अभी ना कराते, तो क्या बिगड़ जाता? आजकल ब्लडप्रेशर बहुत बढने लग गया है इनका।

टी० टी० : हमारा भी बढ़ने लग गया है। अभी परसों चेक-अप करवाया है।

मंजुला : तो फिर आपको बहुत सँभलकर रहना चाहिये। (कुछ सूझता है। उत्साह से) मैं कहती हूँ—आप ऐसा क्यों नहीं करते ?

टी० टी० : क्या ?

मंजुला : आप—मतलब विरोधी दल—साल-भर के लिये अपना विरोध अपने तक ही क्यों नहीं रख लेते ?

टी० टी० : अच्छा !

मंजुला : ज्यादा नही। सिर्फ साल-भर। मैं सोचती हूँ रोज-रोज के विरोध से किसी का भी ब्लडप्रेशर बढ़ सकता है।

टी० टी० : सर चकरा जाता है। रोज-रोज वही आरोप, वही प्रमाण। लेकिन इन लोगो पर किसी तरह के असर का तो नाम ही मत लो।

मंजुला : इसीलिये तो कह रही हूँ, साल-भर विरोध बन्द करके देखिये।

टी० टी० : और उन्हें क्या मनमानी करने दें ?

मंजुला : वैसे भी नतीजा क्या होता है ? आप ही तो कह रहे थे कि सारी मुसीबतें आप को ही हैं।

टी० टी० : मान लेते है कि साल-भर मनमानी करके, थक जायें ये शायद जरूरी नही। लेकिन हाँ एक सम्भावना है, पेट भर खाने के बाद कुछ देर के लिये आदमी की खाने की वासना मर जाती है। तो शायद थोड़े दिन के लिये इनका काम भी सफाई से चलने लगे।

मंजुला : क्या बात कही है ! तो फिर अमल कबसे करना शुरू करेंगे ?

टी० टी० : मैं कौन होता हूँ अमल करने वाला ? और भी तो लोग हैं हमारे—प्रतिदिन सरकार का विरोध करते-करते विरोध की आदत ही हो गई है उनकी। आपस मे भी हमेशा विरोध !

मंजुला : उन्हे समझाइये।

टी० टी० : ऐसा कीजिये भाभी जी ! एक बार आप खुद आकर क्यों नहीं समझाती ?

मंजुला : लेकिन मेरा आना ठीक नही होगा। मुख्यमंत्री की पत्नी विरोधी दल की सभा में ! इनके इमेज को चोट नहीं आयेगी क्या ?

टी० टी० : यह तो सच है। लेकिन बाद में ऐसी घोषणा करवा दीजिए कि मेरे पति मेरी इस भूमिका से सहमत नही हैं। एक व्यक्ति के नाते अपनी भूमिका अलग से सामने रखने का मुझे पूरा हक है। नही तो वेश बदल कर सभा में आ जाइये।

मंजुला : (उत्साह से) मुझसे हो सकेगा ऐसा ? स्कूल में नाटक में काम किया करती थी।

टी० टी० : मुख्यमंत्री की पत्नी से क्या नही होगा ? जो दिल मे आये, वह कर सकती हैं आप। अभी ही देख लीजिये न, पूरे देश मे न मिलने वाली चीजें आप को आसानी से हासिल है।

मंजुला : हासिल नही की है, खुद-ब-खुद चली आई हैं। यह मुख्यमंत्री हैं न; इसीलिये कोई न कोई भेंट देता रहता है। मना करने पर भी मानते थोड़े है लोग ?

टी० टी० : सच कह रही है !

मंजुला : कई बार तो इन्हें पता भी नही होता। मुझे ही लेना पड़ता है। उन्हें बताइये नहीं, हां। वैसे तो कही भी मत बताइये। बेकार बात का बतंगड़ बनेगा।

टी० टी० : बिल्कुल नही बताऊँगा। लेकिन आता कौन-कौन है भाभी जी, यह सारी चीजें लेकर ?

मंजुला : किसी से कहेंगे तो नही ?

टी० टी० : नही।

मंजुला : छोड़िये—

टी० टी० : बताइये भी—

मंजुला : नानालाल, जमनादास, वो यूनुस मुहम्मद, अशोक सेठिया, और भी बहुत-से आते हैं। अच्छे हैं सभी लोग।

टी० टी० : होंगे ही। और कौन-कौन ?

मंजुला : नहीं, इतने काफी हैं।

टी० टी० : फिर भी ?

मंजुला : *छोड़िये ना। नाम में क्या रखा है ?*

टी० टी० : कुछ नहीं। (उठते हैं) अच्छा भाभी जी, चलता हूँ अब मैं।

मंजुला : तो मैं आऊँ आपकी सभा में ? क्योंकि भाषण पहले से तैयार करना पड़ेगा मुझे—

टी० टी० : भाषण तैयार रखिये आप। कहीं-ना-कहीं काम आ ही जायेगा।

मंजुला : *और कुछ नहीं, उनके सर का बोझ थोड़ा हल्का कर सकूं, यही* सोचती हूँ।

टी० टी० : ठीक सोचती हैं।

मंजुला : *और एक बात मेरे दिल मे थी। पूछूं ?*

टी० टी० : बेशक !

मंजुला : दूसरे किसी को पूछो भी तो मुसीबत ! बाय दी वे, ये अभिनेत्री तिलोत्तमा कैसी है ?

टी० टी० : अभिनेत्री तिलोत्तमा ! क्यों भई ? अभिनेत्री की पूछ-ताछ क्यों ?

मंजुला : ऐसे ही। कैसी है वो ?

टी० टी० : पता नहीं। आपके पति के पीछे पड़ी रहने वाली इन अभिनेत्रियों की एन्क्वायरी करने का समय कहाँ होता है हमारे पास ! लेकिन जब अभिनेत्री है वो तो सुन्दर होगी ही।

मंजुला : जवान भी होगी ?

टी० टी० : बिल्कुल ! सैक्सी भी होगी !

मंजुला : तो फिर ठीक ही है।

टी०टी० : क्या ? क्या ठीक है ?

मंजुला : कुछ नही। यह पेपरवाले कुछ भी छाप देते हैं। आज उस गिरिराज में पढा था।

टी०टी० : किसके बारे में ?

मंजुला : आपने नहीं पढा ? ये—और वह—एक बडे होटल में—आगे नही बता सकती। कुछ भी हो हम सभ्य लोग हैं। पेपरवालों के मुंह कौन लगे ? लेकिन इनकी बहुत भद् उड़ गई। उम्र भी तो हो गई है अब इनकी। पर मैं कहती हूँ, चीफ मिनिस्टर के बारे मे लोग ऐसे कैसे छाप सकते हैं ?

टी०टी० : उन्हे तो जेल मे बन्द करवा देना चाहिये। आप कहिये मुरार-राव से।

मंजुला : सीधे नाम तक ले लेते हैं।

टी०टी० : कमाल है उनकी !

मंजुला : मैं तो केस करने की सोच रही हूँ। मैं चीफ मिनिस्टर की पत्नी हूँ। मुझे अपने पति की इमेज का कुछ तो अभिमान होना चाहिए।

टी०टी० : बेशक होना चाहिये ! तो फिर चलूं मैं ?

मंजुला : हां। जब आपके दल की मीटिंग हो तब खबर भिजवा दीजिये।

टी०टी० : जरूर।

(टी० टी० जाते हैं। फोन बजने लगता है। मंजुलाबाई फोन लेती है।)

मंजुला : (रिसीवर पर) हैलो—चीफ मिनिस्टर नहीं हैं—नहीं हैं याने नहीं हैं, एक दफ़ा कहा ना।! फिर ? मैं उनकी पत्नी बोल रही हूँ। आप कौन ? कौन नानालाल ? नानालाल जमनादास ? (एकदम ध्यान आकर) हाँ, हाँ। आप हैं, वो नानालाल ? कैसे हैं ? पकड़े गये थे ? जमानत पर छूटे हैं ? आप जैसे

इन्सान को भी पकड़ते हैं, कमाल है इन पुलिस वालों की भी ! हीरे की अँगूठी ना ? ठीक आ गई थी। बहुत अच्छी है। इनसे मिलना है ? आइये ना, आइये। कब आयेंगे ? हाँ, हाँ, रात को देर से ना ? जरूर आइये। पीछे का दरवाजा खुला रखूंगी। आप जैसों के लिये तो हमारे बँगले के सभी दरवाजे हमेशा के लिये खुले हैं नानालाल जी, आइयेगा। हाँ, खबर कर दूंगी। अच्छा ! (रिसीवर रख देती हैं।)

(अन्धेरा।

फिर प्रकाश।

वही दीवानखाना। हल्की रोशनी मे सिगरेट पीते हुए कोई पीठ किये हुए बैठा है। घड़ी की टिक-टिक। मुराररावं आते हैं।)

मुरार : (बड़ी लाईट जलाते हुए) कहिये नानालाल जी !

(वो बैठा हुआ आदमी एकदम से घूम जाता है। नाक पर गॉगल। दाढी नही है। पहली नजर में पहचान मे नही आता।)

मुरार : (घबराकर) कौन ? (शरीर काँप रहा है) कौन—कौन हैं आप ?

सिदकर : पहचाना नही प्यारे ?

मुरार : प्यारे ! कौन प्यारे ?

सिदकर : तेरी जिन्दगी का पार्टनर।

मुरार : कैसा पार्टनर ! कौन पार्टनर !

सिदकर : मैं तेरा भाई। खाना जो मिले दोनों खायें, खुशी-खुशी डकार लें।

मुरार : एकदम पागल दिखता है।

सिदकर : और तू ! उल्लू का पट्ठा ! (रहस्यपूर्ण हँसी हँसता है।)

मुरार : मुंह सम्भालकर बात कर…नानालाल कहाँ है ?

सिदकर : (मुरारराव की पीठ पर थपकी देते हुए) अबे छोड यार

नानालाल की बात···

मुरार : (दूर होते हुए) किसकी पीठ पर थपकी दे रहा है ? और ऊपर से ये बेअदबी !

सिदकर : (लाड़ से मुरारराव का कॉलर खींचते हुए) मारूँ ! मारूँ ! क्यों बे ! इतने दिनों के बाद मिला है और ऊपर से अकड़ता है ! (कॉलर छोड़कर) चल पान निकाल !

मुरार : नौकर नही हूँ···

सिदकर : खाली-पीली बकबक मत कर यार, पान बना। बना तो !

मुरार : तू···(पहचान कर) सिदकर ! भैया सिदकर !

सिदकर : नही तो क्या उसका बाप ? (मुरारराव के गले में हाथ डालकर) कितने दिनो के बाद मिले हैं हम, है ना ?

मुरार : (अपने आप को छुड़ाते हुए) गले से हाथ हटा पहले।

सिदकर : (हाथ हटाते हुए) अच्छा यार, ले हटा ही लिया। लेकिन बहुत खुशी हुई तुझसे मिलकर। रोज सोचता था आज मिलूंगा, कल मिलूंगा, लेकिन मिल ही नही सका। शहर से बाहर था मैं।

मुरार : शहर से बाहर ?

सिदकर : एक-दो जगह मारपीट की। पुलिस ने शहर से बाहर निकाल दिया। आज मेरी सजा का वक्त पूरा हो गया, सोचा पहले तुझी से मिल लूं।.

मुरार : राज्य के मुख्यमन्त्री के साथ एकवचन मे बात कर रहा है तू ?

सिदकर : हम तो भगवान से भी यूँ ही बात करते हैं एकवचन मे, यार-यार करके, और तू तो मेरा पार्टनर है, मेरा दोस्त ! मेरा भाई ! एक थाली में खायें (हँसता है) हमे तो हमेशा तेरी अपनी उस मुलाकात की याद आती है। बड़ा मजा आया था !

मुरार : क्या काम है मुझसे ?

सिदकर : गोली मार काम को। इतने दिन के बाद मिला है, बड़ा अच्छा

लग रहा है।

(एकदम मुरारराव को नीचे गिराकर उनकी छाती पर सवार हो जाता है। फिर हँसते हुए) ऐसे ही गिराया था ना तूने मुझे उस रात, याद है ?

मुरार : (साँस फूली हुई) पहले तू एक तरफ हो। उठ ! कोई देख लेगा।

सिदकर : (उठकर दूर होते हुए) ले हो गया यार, सब कुछ याद आ रहा है। (इधर-उधर घूमते हुए) तुझे याद है ?

मुरार : (बड़ी मुश्किल से उठकर, कपड़े झाड़ते हुए) तुझे काम क्या है बता, और यहाँ से जा। मैं खाली नहीं हूँ।

सिदकर : इतनी रात को भी तू खाली नहीं है ? (गाल पर प्यार से चपत लगाते हुए) क्यों रे मुरारी ?

मुरार : (गाल झटकते हुए) मुरारराव !

सिदकर : एक जिन्दगी के हिस्सेदार हैं हम ! लेकिन तू तो है मुरारराव, और मैं ? मैं क्या सिर्फ "भैय्या" ? तू मुख्यमन्त्री और मैं शहर से निकाला हुआ एक गुण्डा ? साली अजीब बात है। हम एक फोटो खिंचवा लेते !

मुरार : कोई काम हो तो बता, नहीं तो चलता दिख यहाँ से।

सिदकर : अबे मुरारी के बच्चे, किसके सामने नखरे दिखाता है ? साले मेरी वजह से तू है। मैंने तुझे अपनी किडनी दी, इसीलिए तू बच गया। मेरी किडनी पर जी रहा है और मुझी से अकड़ता है ? ए—क दूंगा···

(हाथ उठाता है। मुरारराव पीछे हट जाते हैं। सिदकर हाथ नीचे करके हँसते हुए) डरपोक ! हम इतने निडर और साले तू मुख्यमन्त्री हो कर भी इतना डरपोक ? हमारा पार्टनर ! (जेब से चार मिनार सिगरेट का पैकेट निकालकर एक सिगरेट मुँह में लेकर, फिर मुरारराव को ऑफर करते हुए) ले ! सिग-

रेट ले। ले भी यार। चाहे तूने पान नही खिलाया, लेकिन हम तुझे सिगरेट पिलायेंगे। ले (डाँटकर) ले!

(मुरारराव जल्दी से सिगरेट ले लेते हैं। सिदकर पहले अपनी सिगरेट सुलगाता है, फिर मुरारराव की।)

सिदकर : (कश ले कर) मजा आ गया। काम-काज कैसा चल रहा है तेरा! सब कुछ जोश मे है न? मजा आता है न मुख्यमन्त्री बन के? क्यो वे कितना पैसा बना लिया? दो चार करोड़? या पाँच पचास लाख? साला हम कही बकेगा नही यार··· तूने क्या कहा था, याद है? शरीर दो है, पर आत्मा एक है! आत्मा याने? किडनी? हाँ तो कितनी एस्टेट बना ली? कुछ गड़बड घोटाला? उस लायसेन्स के घोटाले से कितने बना लिये?

मुरार : गोली···गोली नही है शायद तेरे पास? गोली!

सिदकर : क्यो? तुझे चाहिये? तेरे पास तो दूसरी गोली है। (बन्दूक दागने जैसा इशारा करता है।) साली एकदम ऊपर पहुँचा देने वाली! सात साल के लड़के को गोली मारता है तू? सुना है घर मे बैठी चावल साफ करने वाली औरत को भी तू सीधे ऊपर पहुँचा देता है। साला लँगड़े भिखारी को भी गोली!

मुरार : वह मैंने नही चलाई।

सिदकर : हट साले, कबूल करने की भी हिम्मत नही है तेरे पास।

मुरार : हिम्मत का सवाल नही है यह। जहाँ-जहाँ गोली चले वहाँ-वहाँ मुख्यमन्त्री खुद भी हाजिर हो, अगर ऐसी लोगों की माँग हो तो···

सिदकर : (नाक की एक साइड पर उँगली रखकर) नखरे कितने करता है? किडनी की कसम ले कर बोल यार···

मुरार : तेरा काम क्या है? तू बस उतना कह दे। रात बहुत हो रही है। सुबह फिर मुझे बहुत से काम हैं। सुबह जल्दी उठकर कुछ

फाइलें भी देखनी हैं।

सिदकर : वैसे देखा जाय तो शहर के सारे दादा और दारु-भट्ठी वाले तेरे दल में हैं।

मुरार : फालतू बातें नही चाहिये---

सिदकर : ऑल-राइट ! नही चाहिये तो ना सही। तूने एक बारे हमसे वचन लिया था, याद है ? तुझे याद ना हो तो कोई बात नही। पर मुझे अच्छी तरह से याद है। जिन्दगी मे हमे किसी चीज की जरूरत आन पड़े तो हम तुझी से मांगे। मेरी छाती पर बैठकर तूने यह वचन लिया था। याद आया ?

मुरार : लिया होगा।

सिदकर : चाहे तू ना हो, लेकिन हम वचन के सच्चे हैं। वह वचन हम कभी भूले नहीं। पर साला तेरे से कुछ मांगा जाय, ऐसा कभी हमें लगा ही नही। आजकल लगने लगा है कि कुछ मांग ही लिया जाय। मांगना ही पड़ेगा। सिर्फ तू वह दे सकता है और मैं मांग सकता हूँ।

मुरार : ऐसा क्या है ?

सिदकर : (कश लेकर शान्त स्वर में) किडनी !

मुरार : क्या ?

सिदकर : मेरी किडनी। वही—जो तेरे पेट में लगाई गई थी। या उसे भी भूल गया ?

मुरार : हाँ !

सिदकर : कब देगा ?

मुरार : क्या ?

सिदकर : मेरी किडनी मुझे वापिस कब देगा ?

मुरार : होश मे तो है ना तू ?

सिदकर : देख यार, नखरे मत कर। किडनी की बात कर !

मुरार : अरे क्या कह क्या रहा है तू ?

सिदकर : अपनी किडनी हमें वापस चाहिये बस !

मुरार : किडनी-विडनी भी कही वापिस माँगी जाती है···

सिदकर : हम माँग रहे हैं। हमें चाहिए वह। तूने क्या कहा था, याद कर। मुझे कभी भी कुछ चाहिये हो तो तुझसे ही माँगूं। मुझसे ऐसा वचन लिया था तूने।

मुरार : इसका यह मतलब नही कि तू किडनी माँगे।

सिदकर : यह हमारे मर्जी की बात है। हमारे दिल मे जो आयेगा वही माँगेगे। यह मत माँगना, वह माँगना, ऐसा उस वक्त तूने कहा था क्या ?

मुरार : लेकिन ऐसी अजीब माँग···

सिदकर : यार, सँभलकर बात कर। किडनी किसकी है ?

मुरार : जब ली थी तब तेरी थी—-

सिदकर : उसी की वजह से तू जिन्दा रहा ना ? साफ साफ बोल···

मुरार : हाँ !

सिदकर : इसका मतलब मेरी वजह से तू जिया। तेरे जिन्दा रहने में मेरी हिस्सेदारी है। ऐसा तूने ही कहा था।

मुरार : इसीलिये क्या किडनी···

सिदकर : बहुत हो चुकी हमारी हिस्सेदारी। आगे से हमें नही चाहिये तेरी हिस्सेदारी। जब अपना हिस्सा हमे वापिस चाहिये, तो किडनी ही तो मागूंगा ? बोल ! नही मागूंगा क्या ?

मुरार : यह देख सिदकर—

सिदकर : चीफ मिनिस्टर, खाली-पीली, फिजूल बातें मत कर। जब मैंने तुझे किडनी दी थी तब किसी ने हमसे जबरदस्ती की थी क्या ? हमारी खुशी का सवाल था न वो। हमने तुझे देखा तक नही था, काला है या गोरा है। तू तब चीफ मिनिस्टर कहाँ था ? साला तू कौन था, यह भी हम नहीं जानते थे। मैंने तुझे किडनी क्यों दी ? सिर्फ अपनी खुशी। बस। अब वैसे ही अपनी किडनी

हमे वापस चाहिये…हमारी खुशी। बोल कब देगा ?

मुरार : (होशियार होने लगते हैं) देख सिदकर, कल सुबह, नही तो परसों मेरे पी० ए० को फोन करके अपॉइण्टमेण्ट ले ले, फिर हम इसके बारे मे…

सिदकर : नही अपने पास टाईम नही है। अभी ठहरा ले जो ठहराना है।

मुरार : लेकिन तू अभी सुनने की हालत मे नही है।

सिदकर : क्योकि अपना विचार पक्का है। अपनी चीज कब वापिस लेनी है, इसका फैसला कोई दूसरा क्यो करे ? खुद फैसला करेंगे। तेरे साथ हमे हिस्सेदारी नही चाहिये, बऽऽस ! ज्यादा बोलने की जरूरत नही है। तू हमारी किडनी लौटा दे, मामला खत्म !

मुरार : पैसे लौटाने की तरह आसान तो नही है यह ?

सिदकर : जब हमने तुझे किडनी दी थी, तब क्या आसान था ? साला, जिन्दगी और मौत का सवाल था। बड़ा ऑपरेशन था। तब दी थी या नही हमने किडनी ?

मुरार : लेकिन…

सिदकर : जैसे दी थी, वैसे हम वापिस मांगते हैं। लेते वक्त कैसे जल्दी से ले ली थी ? वैसे ही दे डाल अब !

मुरार : देख सिदकर, किडनी देने के तेरे हौसले की जितनी तारीफ की जाय, उतनी कम है—

सिदकर : बकबक मत कर। किडनी दे !

मुरार : ठीक है। हम इस सवाल पर जरा अच्छी तरह सोचते हैं। सिदकर ! तेरे दिल में यह ख्याल आया कैसे ?

सिदकर : सच कहूँ चीफ-मिनिस्टर ? साली एक दिन सुबह हमे जाग आई और सोचा कि एक इन्सान की जिन्दगी के हम हिस्सेदार हैं। पार्टनर हैं। हमारी एक किडनी उसके पेट में है। और अपने पास साली एक ही किडनी है। और वो हमारा पार्टनर याने तू है…! एकदम साला सर फिर गया। ऐसा कमीना

पार्टनर ? ऐसे काले-धन्धे में हिस्सेदारी ? गरीबों के पेट काट कर राज्य में लफड़ेबाजी करने वाले इन्सान के साथ पार्टनरशिप ? साला इससे तो शराब की भट्ठीवाला अच्छा है !

मुरार : सिदकर, तेरा दिमाग भी शायद विरोधियों और अखबारवालों के ऊल-जलूल प्रचार से बिगड़ गया है।

सिदकर : झूठ ! हम कभी अखबार पढ़ते ही नही। लकिन हर जगह घूमते हैं हम और आँख, कान खुले रखते हैं। चाहे बाकी सब कुछ नशे मे गायब हो जाय (सर की तरफ इशारा करते हुए) पर यह होश में रहता है। सब चीजें बराबर अन्दर नोट होती रहती हैं। चीफ मिनिस्टर, तू पत्थर दिल इन्सान, गरीबों को तंग करता है। अमीरों के मजे करवाकर, उनसे समझौता करके अपनी जेबें भरने वाला, तू बहुत बड़ा जेब-कतरा है।

मुरार : सिदकर !

सिदकर : तू बेगुनाहों की जान लेकर अपनी जान बचाने वाला जालिम खूनी है।

मुरार : शटअप सिदकर···

सिदकर : तू शरीफ लोगों के वोट निगलकर डाकुओं के दल में शामिल एक धोखेबाज लीडर है।

मुरार : सिदकर, एक चीफ मिनिस्टर के सामने यह सब बक रहा है तू ?

सिदकर : तू सिर्फ चीफ मिनिस्टर की खाल ओढ़ने वाला डरपोक गीदड़ है। सब लोग भी यही कहते हैं।

मुरार : तुझे—तुझे जेल भिजवा दूँगा। देश निकाला दे दूँगा।

सिदकर : ए, डर किसे दिखाता है ? हम यह सब कुछ कर चुके हैं ! हमारी किडनी निकाल दे, बस। बाकी बातें फिर। ऐसे नालायक और पत्थर दिल इन्सान से पार्टनरशिप ? अरे हट ! पार्टनरशिप खत्म होनी ही चाहिये अब !

मुरार : मेरे बारे में विरोधियों द्वारा फैलाई गई बातों से तुझे गलत-

फहमी हो गई है सिदकर।

सिदकर : तेरे विरोधी साले कौन और कहाँ रहते हैं, हम जानते भी नहीं। अपनी सारी फँमियाँ तो लोगों के कहने से बनी हैं।

मुरार : लोगों का क्या ? वे तो विरोधियों के प्रचार पर से बलि होते हैं···

सिदकर : क्योंकि उनकी हालत तो पहले से ही खराब होती है। उनका जीना नरक बन चुका होता है। उनके वोट निगलकर, उनकी तरफ से मुँह फिराकर राज करने वाले तुम उन लोगों को दिखाई देते हो, इसीलिये। चीफ मिनिस्टर! तुम्हें लगता है कि तुम आँखें बन्द कर लोगे, तो शायद तुम्हें कोई देख नहीं सकेगा। लेकिन लोग देखते हैं—बाकायदा!

मुरार : किसी विरोध करने वाले धन्धेबाज की तरह बोल रहा है तू···

सिदकर : गाली मत दे। हम अपनी तरह से जीते हैं, और बोलते हैं। किडनी दी थी तब भी ऐसे ही जीते थे, वो वापिस माँग रहे हैं, तब भी ऐसे ही जी रहे हैं। अपनी मर्जी से। लोग जो कुछ बोल रहे हैं, वो अगर झूठ हो तो खा माँ की कसम और कह यह सब कुछ झूठ है। कह ना!

मुरार : माँ कसम, यह सब कुछ झूठ है।

सिदकर : (डिसगस्ट से) अरे रे! चीफ मिनिस्टर, सत्ता ने तेरे अन्दर के इन्सान को इतना झूठा बना डाला है? इतना? माँ की कसम तक खा गया तू? लोग जो कहते हैं उनमें से ज्यादातर बातें सौ फीसदी सच हैं। उसका प्रमाण पूरा शहर चिल्ला-चिल्लाकर दे रहा है।

मुरार : बैठ ना। हम कुछ बियर-वियर पीते हैं···

सिदकर : नहीं! पार्टनरशिप खत्म। (मुरारराव के पेट में उँगलियाँ ठूँसाकर) किडनी वापिस दे, वरना मैं खुद ही निकाल लूँ?

मुरार : अरे, लेकिन ! कोई आ गया तो···

सिदकर : हम किसी से डरते नहीं। जो अपना है, हम उसे वापिस माँग रहे हैं। साला कोर्ट भी इसमें कुछ नहीं कर सकता।

मुरार : मैं किडनी वापिस नहीं दूंगा—अगर मैंने ऐसा कहा तो ?

सिदकर : तू कह सकता है। तू चालाक है। मुझसे वचन ले लिया, लेकिन तूने वचन नहीं दिया।

मुरार : (खुश हो कर) यही तो···

सिदकर : (पेट में से एक अजीब-सा दिखाई देने वाला लोहे का कुछ निकालता है।)

मुरार : क्या है वो ?

सिदकर : किडनी वापिस पाने का तरीका।

मुरार : ओ: नो !

सिदकर : (वो अजीब-सा हथियार खींचकर लम्बा और लम्बा किये जाता है।) साला एक दम रामबाण !

मुरार : नही, नही !

(लाइटस् बदलते हैं।
सिदकर और उसके अजीब से हथियार की "विभार" छाया पीछे दिखाई पड़ती हैं। हथियार चमकने लगता हैं। सिदकर की आँखें भी चमकने लगती हैं। उनमें पागलपन की झलक है।)

सिदकर : चलो चीफ मिनिस्टर···

मुरार : नही, सिदकर ! सवाल हल करने का यह रास्ता नहीं है—

सिदकर : कमीज ऊपर कर···ऊपर कर कमीज···

मुरार : यह जबरदस्ती हो रही है···

सिदकर : पजामा नीचे कर···चल···किडनी···मेरी किडनी···

मुरार : बचाओ···कौन है उधर···सिदकर इसके लिये प्रधानमंत्री तुझे कभी क्षमा नही करेंगे—

सिदकर : अपनी किडनी ले के ही रहूँगा मैं…बस्स…पार्टनरशिप खत्म…

(मुरारराव चिल्लाना चाहते हैं, लेकिन गले से कुछ दबी-दबी-सी आवाजें निकलती हैं। सिदकर उनकी तरफ जाने लगता है। मुरारराव की बहुत लम्बी चीख !

मुरारराव जेब से एक ऑड दिखाई देने वाला पिस्तौल निकाल कर सिदकर की तरफ उसका रुख किये हुये है। सिदकर आगे आगे बढ़ रहा है। इस सब के साथ "विभ्रार" बैंक ग्राउंड म्युजिक, जंगली जानवरों की आवाजें वगैरा। मुरारराव आँखें बन्द करके पिस्तौल दागते हैं। पिस्तौल में से पानी की एक बड़ी धारा निकलती है। भीगे हुए सिदकर का विकट हास्य। उसके हाथ में वो अजीब हथियार।

मुरारराव पीछे-पीछे हो रहे हैं। भीगे हुए सिदकर को छींक आने लगती है। उसके नाक में कुछ अजीब-सा हो रहा है, उसका ध्यान नही है। मुरारराव उसके पेट में घूँसा लगाते हैं। सिदकर को जोर से छींक आती है, और मुरारराव इस आवाज से हड़बड़ाकर नीचे बैठ जाते हैं।

सिदकर फिर जोर से हँसता है। अब वह बहुत पास आ चुका है। उसके हाथ में वो अजीब हथियार चमक रहा है। सिदकर की चमकती हुई आँखें। डरे हुए मुरारराव। उनकी लम्बी चीख !

अन्धेरा। म्यूजिक धीमा होता जा रहा है। प्रकाश।…फेड-सा।

फिर मंजुलाबाई आकर स्विच ऑन करती हैं। मुख्यमंत्री की पत्नी को सूट करता हुआ नाईट गाऊन, बालों में काफी पिनें वगैरह। मुरारराव टेबल के पास रखी कुर्सी पर पसीना-पसीना हो कर किसी भ्रम में बैठे हैं।)

मंजुला : क्या हुआ ? यों टारजन की तरह क्यों चिल्लाये ?

मुरार : वो…वो…

मंजुला : कौन वो ?

मुरार : वो…सिद…सिदकर…

मंजुला : सिदकर ! वही जिसने आपको किडनी दी थी ?

मुरार : बाप रे ! भयंकर !

मंजुला : सपना तो नहीं देखा आपने ?

मुरार : (पेट को पकड़े हुए) मेरी किडनी।

मंजुला : पर हुआ क्या ?

मुरार : वो गया कहाँ ? सिद—सिदकर ?

मंजुला : अजी वो तो कब का मर गया…

मुरार : क्या !

मंजुला : हाँ वही सिदकर न ? वो मर गया। दो महीने हो चुके। उसकी जो एक किडनी बच गई थी वो बेकार हो गई थी। दूसरी मिली नहीं, इसलिए मर गया। मैंने आपको जानबूझ कर ही नहीं बताया।

मुरार : (लम्बी साँस छोड़ते हैं।)

मंजुला : वो सपने में आया था क्या ?

मुरार : बाप रे !

मंजुला : ऐसे टेढ़े-मेढ़े होकर बैठे-बैठे सो जाने से ऐसे ही अनाप-शनाप सपने आते हैं आपको। फिर भी आप ऐसे ही सोते हैं। अन्दर चलकर ठीक से सोइये। चलिए। कोई नहीं है सिदकर-फिदकर। सब आपके खयाली चक्कर हैं। चलिये !

(मुरारराव उठते हैं। अनजाने दोनों हाथ पेट पर। मंजुलाबाई के पीछे वैसे ही चलते हैं। फिर एकदम रुक जाते हैं। खुद-ब-खुद हँसते हैं। हाथ नीचे करके मजे में चलते हुए अन्दर चले जाते हैं। बैक ग्राउंड पर इस दृश्य को सूट करने वाला पुलिस

बेंड शुरू हो जाता है। मुरारराव के अन्दर चले जाने पर अन्धेरा।

सफेद परदे पर प्रकाश।

पुलिस बेंड शुरू। परदे पर अचकन डाले हुए मुरारराव गार्ड ऑफ ऑनर लेते हुए। सीधे खड़े हैं। सलाम करने की मुद्रा में। पेट खासा मोटा दिखाई दे रहा है।

पुलिस बेंड के साथ-साथ थोडी-थोड़ी देर बाद दूर से सुनाई पड़ने वाली तोपों की आवाजें भी सुनाई देने लगती है।

क्रमशः अँधेरा।

पुलिस बेंड चालू रहता है।

और तोपों की आवाजें भी।)

परदा का गिरना

□□□